मूल्य : 20/- पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 डाक पंजीकरण संख्या : UP/GBD- 249/2020-2022

वर्ष : ५ अप्रैल : २०२१, विक्रमी सम्वत् : २०७७-७८
सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२१-१२२, दयानन्दाब्द : १९७-१९८ अंक : ७०

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883 ईस्वी सन्
1881-1940 विक्रमी सम्वत्

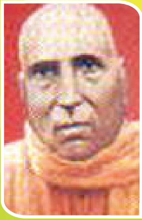

स्वामी स्वतंत्रानंद
स्मृति : 4 अप्रैल

महाशय राजपाल
बलिदान : 6 अप्रैल

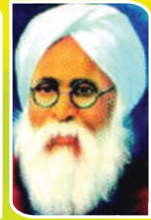

महात्मा हंसराज
जयंती : 19 अप्रैल

गुरुदत्त विद्यार्थी
जयंती : 26 अप्रैल

विशेषांक : महात्मा हंसराज

नव संवत्सर व आर्य समाज स्थापना दिवस की हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं

भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों की झलकियां

ओ३म्

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम्॥

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
प्रधान
श्री मनोहर लाल सरदाना

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी
संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार
सह संपादक
आचार्य ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17, Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022
Date of Dispatch 12 Every Month

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : पाखण्ड का अंधकार	2
2.	राम नवमी पर विशेष	3
3.	वेदों में सूर्य किरण चिकित्सा	4-5
4.	महात्मा गांधी और गौरक्षा	6-7
5.	वैदिक धर्म दु:खों से रक्षार्थ सत्य...	8-9
6.	कब्र पूजा : मुर्खता अथवा अंधविश्वास	10
7.	संस्कृत भाषाया: महत्वम्...	11
8.	महापुरुषों को नमन...	12-13
9.	सौम्य व्यक्तित्व एवं दिव्य कृतित्व के...	14-15
10.	महात्मा हंसराज : एक आदर्श आचार्य	17
11.	समाचार-सूचनाएं	22
12.	सुस्वास्थ्य : दर्द व सूजन का ठंडा इलाज...	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	10,000 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	7000 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	5000 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	2500 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	1500 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय

आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734
9899349304
captakg21@yahoo.co.in

Web : www.noidaaryasamaj.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

पाखण्ड का अंधकार

मैं यह अनुभव करता हूं कि देश में साक्षरता दर बढ़ती जा रही है या आधुनिक भाषा में कहूं तो शिक्षित लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है किंतु अंधविश्वास एवं पाखंड भी बढ़ते ही जा रहे हैं। बड़े–बड़े तथाकथित शिक्षित लोग भी अंधविश्वास से ग्रस्त दिखाई देते हैं। ऐसे ही बड़े लोगों के कारण साधारणजन और अंधविश्वासी हो जाते हैं। सबने देखा कि किस तरह के कुछ बड़े लोग मांगलिक दोष के निवारण हेतु मंदिर–मंदिर घूमते हैं। पढ़े–लिखे लोग भी मंदिरों में अपनी मन्नत पूरी करने के लिए पशुओं की बलि देते हैं। अंधविश्वास के वशीभूत होकर लोग स्त्रियों की शादी पेड़ों या अन्य प्राणियों से करवाते हैं। अनपढ़ तांत्रिकों के चक्कर में फंसकर प्रतिवर्ष कितने लोग अपनी जिंदगी बर्बाद करते हैं।

देश में अंधविश्वासी लोग हवन की पवित्र अग्नि में लाल मिर्च जैसी वस्तुओं की आहुति देते हैं। प्राणियों की हत्या करके उनको मांसाहार का प्रसाद रूप में वितरित किया जाता है। मंदिरों में शराब चढ़ाई जाती है, भक्तगणों को भी प्रसाद के रूप में शराब पिलाई जाती है। कथित ज्योतिष व अनपढ़ पंड़ितों द्वारा अच्छे–अच्छे पढ़े–लिखे लोगों को मूर्ख बनाया जाता है। आज भी हम पंचक जैसी मूढ़ परम्पराओं पर विश्वास करते हैं। जीवन में, देश में, दुनिया में, पाखंड बढ़ता ही जा रहा है।

महर्षि स्वामी दयानन्द का बोधोत्सव हमने मनाया है। बिना बोध के इंसान का जीवन वस्तुत: पशुओं जैसा ही होता है। बोध को प्राप्त करने का सीधा रास्ता वेदों से, आर्ष ग्रंथों से होकर गुजरता है। सद्ग्रंथों के स्वाध्याय से सुमति का विकास होता है। सुमति से सुकृति, क्रांति से स्थिति ठीक रहती है। यदि देश में सत्यार्थ प्रकाश का पठन–पाठन बढ़ जाये तो दुनिया को कुरान, पुराण, बाइबिल की सड़ी–गली विचारधारा से लोगों को मुक्ति मिल जायेगी।

■ **आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार**

देश में अंधविश्वास एवं पाखंड भी बढ़ते ही जा रहे हैं। बड़े-बड़े तथाकथित शिक्षित लोग भी अंधविश्वास से ग्रस्त दिखाई देते हैं। ऐसे दो बड़े लोगों के कारण साधारणजन और अंधविश्वासी हो जात हैं। सबने देखा कि किस तरह के कुछ बड़े लोग मांगलिक दोष के निवारण हेतु मंदिर-मंदिर घूमते हैं। पढ़े-लिखे लोग भी मंदिरों में अपनी मन्नत पूरी करने के लिए पशुओं की बलि देते हैं। अंधविश्वास के वशीभूत होकर लोग स्त्रियों की शादी पेड़ों या अन्य प्राणियों से करवाते हैं। अनपढ़ तांत्रिकों के चक्कर में फंसकर प्रतिवर्ष कितने लोग अपनी जिंदगी बर्बाद करते हैं। अंधविश्वासी लोग हवन की पवित्र अग्नि में लाल मिर्च जैसी वस्तुओं की आहुति देते हैं। प्राणियों की हत्या करके उनको मांसाहार प्रसाद रूप में वितरित किया जाता है। मंदिरों में शराब चढ़ाई जाती है, भक्तगणों को भी प्रसाद के रूप में शराब पिलाई जाती है। कथित ज्योतिष व अनपढ़ पंड़ितों द्वारा अच्छे-अच्छे पढ़े-लिखे लोगों को मूर्ख बनाया जाता है। आज भी हम पंचक जैसी मूढ़ परम्पराओं पर विश्वास करते हैं। जीवन में, देश में, दुनिया में, पाखंड बढ़ता ही जा रहा है। महर्षि स्वामी दयानन्द का बोधोत्सव हमने बनाया है। बिना बोध के इंसान का जीवन वस्तुत: पशुओं जैसा ही होता है। बोध को प्राप्त करने का सीधा रास्ता वेदों से, आर्ष ग्रंथों से होकर गुजरता है। सद्ग्रंथों के स्वाध्याय से सुमति का विकास होता है।

राम नवमी पर विशेष

मानवता का उदय होना कालचक्र की सहज गति है। बाल्मीकि रामायण में मानवता के चरम रूप में राम को आदर्श स्वीकार किया गया है, ईश्वर के अवतार के रूप में नहीं। रामायण में अनेकों जगह ऐसे प्रसंग आये हैं जहां राम को ईश्वर न सिद्ध करके महा मानव और पुरुषोत्तम ही वर्णित किया गया है। श्रीराम ने स्वयं भी अपने को मनुष्य स्वीकार किया है। 'आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम्' युद्ध कांड 117 सर्ग) में राम अपने को मनुष्य ही मानते हैं और अपने को राजा दशरथ का पुत्र कहते हैं। सीता अपहरण होने पर श्रीराम व्यथित होकर कहते हैं- **पूर्वं मया नूनमभीप्सितानि पापानि कर्माण्यसत्कृतानि।**

(अरण्य का. 63 सर्ग)

मैंने पूर्व जन्म में बार-बार ऐसे दुष्कर्म किये थे जो मुझे निरंतर दुख भोगने पड़ रहे हैं। राज्य से तथा अपने पारिवारिकजनों से वियोग होना, पिताश्री का देहावसान तथा सीता से वियोग होना, क्या यह दुखों की पराकाष्ठा से अग्नि की भांति प्रदीप्त होना नहीं है। राम-रावण युद्ध में जब इंद्रजीत के बाणों से लक्ष्मण घायल हो जाते हैं तो उसे देख, अत्यंत दुखाकुल हो, राम कहते हैं- **किं मया दुष्कृतं कर्म कृतमन्यत्र जन्मनि। येन मे धार्मिको भ्राताः निहतश्चाग्रतः स्थितः।।** (युद्ध का. 63 सर्ग)

मेरे से पूर्व जन्म में ऐसा कोई दुष्कर्म हो गया है जिसका फल यह है कि मैं अपने धार्मिक भाई को मृतप्राय देख रहा हूं। रावण वध के अनंतर राम अपने आपको मनुष्य मानते हुए सीता से कहते हैं- **यत्कर्तव्यं मनुष्येन धर्षणा परिमार्जता। तत्कृतं सकलं सीते शत्रुहस्तादमर्षणात्।।**

हे सीते! मैं मनुष्य होता हुआ जो कुछ कर सकता था वह मैंने किया और यह अच्छा ही रहा कि शत्रुओं के साथ से कभी हर्षित नहीं हो सका। बाल्मीकि रामायण में अनेक प्रसंगों में राम को अवतार न मानकर मानव ही वर्णित किया गया है। अंध-श्रद्धा से दुराग्रही वृत्ति वाले लोगों ने अनहोनी कल्पनाओं, देवी प्रसंगों, अवतारों, प्रक्षेपों और चमत्कारों से राम एवं कृष्ण के रूप को विकृत एवं अविश्वसनीय बना दिया है। आज के वैज्ञानिक मशीनीयुग में अनेक स्पष्टीकरण देने के बाद उसको ऐतिहासिकता और उपादेयता को स्वीकार करने के लिए संदिग्ध दृष्टिकोण अपनाया जा रहा है। अनेक काल्पनिक और मनगढ़ंत प्रसंगों को प्रक्षिप्त करके रामायण और महाभारत जैसे अद्भुत शिक्षाप्रद महाकाव्यों को कथानकों को काल्पनिक कहने की खुली छूट दे दी गई है।

राम और कृष्ण को मर्यादा-पुरुषोत्तम, महापुरुष, आदर्श राजा के स्थान पर भगवान के अवतार के रूप में प्रस्थापित करके उन्हें मानव समाज से लगभग काट सा दिया है। यदि बाल्मीकि और व्यास वर्णित राम और कृष्ण के उच्च पुरुष और महान मानव के रूप को ही महत्व दिया जाता तो देश का अधिक कल्याण हो सकता था। लोगों ने उन्हें ईश्वर मानकर मनुष्यता की गरिमा को मटियामेट कर दिया है। अपने में हीन भावना मानकर कुछ लोग कहने लगे कि राम और कृष्ण तो ईश्वर थे, वे तो सब कुछ कर सकते थे। उन्होंने जो कुछ दिया वह उनकी ईश्वरीय शक्ति से हुआ, हम तो वह नहीं कर सकते क्योंकि हम मनुष्य हैं। हमारी अल्पशक्ति है, मनुष्य और ईश्वर का क्या मुकाबला।

सामाजिक धरातल पर संघर्ष और दायित्व निर्वाह की क्षमता मानव के रूप में न होकर अवतार के रूप में अधिक महत्व की नहीं है। मानव का सबसे बड़ा चारित्रिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप राम के जीवन में निहित है, जो परिपूर्ण होने के बावजूद प्रयोगात्मक ढंग से खरा उतरता है।

श्रीराम का आदर्श विसंगतियों से मुक्त होकर सहज आदर्श की ओर बढ़ता हुआ कदम है। आज का युग घर के बिखराब की समस्या से संत्रस्त है। कौटुम्बिक टूटन के संकट के कारण भाई-भाई, पिता-पुत्र के संबंध और आदर्श परिवार की शिक्षा राम के समूचे जीवन और व्यवहार से मिलती है। राम के आदर्श जीवन से प्रेरणा लेकर पारिवारिक टूटन को बचाया जा सकता है। शबरी के बेर स्वीकार करने वाले, केवट को गले लगाने वाले, परि-त्यक्त जंगली वानर जाति के लोगों को सखा बनाकर भाइयों के समान आदर और स्नेह देने वाले राम से बढ़कर कोई अन्य महापुरुष दिखाई नहीं देता।

शत्-शत् नमन!!

वेदों में सूर्य किरण चिकित्सा

आचार्य शिव पूजन सिंह कुशवाहा

सूर्य किरण से नाना प्रकार के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। वाष्प स्नान से जो लाभ होता है वही लाभ धूप स्नान से होता है। धूप स्नान से रोम कूप खुल जाते हैं और शरीर से पर्याप्त मात्रा में पसीना निकलता है और शरीर के अन्दर का दूषित पदार्थ गल कर बाहर निकल जाता है। जिससे स्वास्थ्य सुधर जाता है।

जिन गायों को बाहर धूप में घूमने नहीं दिया जाता है और सारे दिन घर में ही रख कर खिलाया-पिलाया जाता है, उनके दुग्ध में विटामिन डी विशेष मात्रा में नहीं पाया जाता है।

उदय काल का सूर्य निखिल विश्व का प्राण है। प्राण:प्रजानामुदयत्येष सूर्य: प्राणोपनिषद् 1/8 सूर्य प्रजाओं का प्राण बन कर उदय होता है।

अथर्ववेद में सूर्य किरणों से रोग दूर करने की चर्चा है। अथर्ववेद 1 सूक्त 22 में-

अनुसूर्यमुदयतां हृदयोतो हरिमा चते।
गौ रोहितस्य वर्णन तेन त्वा परिद्वयसि॥

अर्थ- हे रोगाक्रांत व्यक्ति। तेरा हृदय धड़कन, हृदयदाह आदि रोग और पांडुरोग सूर्य के उदय होने के साथ ही नष्ट हो जाए। सूर्य के लाल रंग वाले उदयकाल के सूर्य के उस उदय कालिक रंग से भरपूर करते हैं।

इस मंत्र में सूर्य की रक्त वर्ण की किरणों को हृदय रोग के नाश करने के लिए प्रयोग करने का उपदेश है। सूर्य किरण चिकित्सा के अनुसार कामला और हृदयरोग के रोगी को सूर्य की किरणों में रखे लाल कांच के पात्र में रखे जल को पिलाने का उपदेश है।

परित्वा रोहितेर्वर्णेदीर्घायुत्वाय दम्पति।
यथायमरपा असदथो अहरितो भुवत्॥

अर्थ- हे पांडुरोग से पीड़ित व्यक्ति। दीर्घायु प्राप्त कराने के लिए तेरे चारों ओर सूर्य की किरणों से लाल प्रकाश युक्त आवरणों में तुझे रखते हैं जिससे यह तू रोगी पाप के फलस्वरूप रोग रहित हो जाय और जिससे तू पांडुरोग से भी मुक्त हो जाय।

ऐसे रोगियों को नारंगी, सन्तरे, सेब, अंगूर आदि फलों को खिलाने तथा गुलाबी रंग के पुष्पों से विनोद कराना भी अच्छा है।

या रोहिणी दैवत्या गावो या उत रोहिणी:। रुपं रुपं वयोवयस्तामिष्ट्रवा परिदध्यसि॥

अर्थ : जो देव, प्रकाश सूर्य की प्रात:कालीन रक्त वर्ण की किरणें हैं

और जो लाल वर्ण की कपिला गायें हैं या उगने वाली औषधियां हैं उनके भीतर विद्यमान कान्तिजनक चमक को और दीर्घायु जनक उन द्वारा तुझको सब प्रकार से परिपुष्ट करते हैं।

हृदयरोग के सम्बन्ध में वाव्यटूट अष्ठग संग्रह हृदय रोग निदान में लिखते हैं, पांच प्रकार का हृदय रोग होता है वातज, पितज, कफज, त्रिदोषज और कृमियों से। इनके भिन्न-भिन्न लक्षण प्रकट होते हैं। इसी प्रकार पांडुरोग का एक विकृत रूप हलीमक है। उसमें शरीर हरा, नीला, पीला हो जाता है। उसके सिर में चक्कर, प्यास, निद्रानाश, अजीर्ण और ज्वर आदि दोष अधिक हो जाते हैं। इनकी चिकित्सा में रोहिणी और हारिद्रव और गौक्षीर का प्रयोग दर्शाया गया है। रोहित रोहिणी, रोपणाका, यह एक ही वर्ग प्रतीत होता है। हारिद्रव हल्दी और इसके समान अन्य गांठ वाली औषधियों का ग्रहण है। शुक भी एक वृक्ष वर्ग का वाचक है।

अथर्ववेद काण्ड 6, सूक्त 83 में गंडमाला रोग को सूर्य से चिकित्सा करने का वर्णन है।

अपचित: प्रपतत सुपर्णो वसतेरिव।
सूर्य: कृणोतु भेषजं चन्द्रमा वो पोच्छतु॥

(अथर्व. 6/83/1)

अर्थ : हे गंडमाला ग्रन्थियों। घोंसले से उड़ जाने वाले पक्षी के समान शीघ्र दूर हो जाओ। सूर्य

वाष्प स्नान से जो लाभ होता है वही लाभ धूप स्नान से होता है। धूप स्नान से रोम कूप खुल जाते हैं और शरीर से पर्याप्त मात्रा में पसीना निकलता है और शरीर के अन्दर का दूषित पदार्थ गल कर बाहर निकल जाता है। जिससे स्वास्थ्य सुधर जाता है। जिन गायों को बाहर धूप में घूमने नहीं दिया जाता है और सारे दिन घर में ही रख कर खिलाया-पिलाया जाता है, उनके दुग्ध में विटामिन डी विशेष मात्रा में नहीं पाया जाता है। उदय काल का सूर्य निखिल विश्व का प्राण है। प्राण:प्रजानामुदयत्येष सूर्य: प्राणोपनिषद् 1/8 सूर्य प्रजाओं का प्राण बन कर उदय होता है।

चिकित्सा करे अथवा चन्द्रमा इनको दूर करे। यहां सूर्य की किरणों से गंडमाला की चिकित्सा करने का उपदेश है। नीले रंग की बोतल से रक्त विकार के विस्फोटक दूर होते हैं। यही प्रभाव चंद्रालोक का भी है। रात में चन्द्रातप में पड़े जल से प्रातः विस्फोटकों को धोने से उनकी जलन शान्ति होती है और विष नाश होता है।

एन्येका एयेन्येका कृष्णे का रोहिणी वेद। सर्वासामग्रभं नामावीरपूनीरपेतन॥

(अथर्व. 6/83/2)

अर्थ : गंडमालाओं में से एक हल्की लाल श्वेत रंग की स्फोटमाला होती है, दूसरी श्वेत फुंसी होती है। तीसरी एक काली फुंसियों वाली होती है। और दो प्रकार की लाल रंग की होती है उनको क्रम से ऐनी, श्येनी, कृष्णा और रोहिणी नाम से कहा जाता है। इन सबका शल्य क्रिया के द्वारा जल द्रव पदार्थ निकालता हूं। पुरुष का जीवन नाश किये बिना ही दूर हो जाओ।

असूतिका रामायणयऽपचित प्रपतिष्यति। ग्लोरितः प्र प्रतिष्यति स गलुन्तो नशिष्यति ॥

(अथर्व. 6/83/3)

अर्थ : पीव उत्पन्न न करने वाली गंडमाला, रक्तनाड़ियों के मर्म स्थान में होने वाली, ऐसी गंडमाला भी पूर्वोक्त उपचार से विनाश हो जायेगी। इस स्थान से व्रण की पीड़ा भी विनाश हो जायेगी।

वीहि स्वामाहुतिं जुषाणो मनसा स्वाहा यदिदं जुहोमि। (अथर्व. 6/83/4)

अर्थ : अपने खाने-पीने योग्य भाग को मन से पसन्द करता हुआ सहर्ष खा, जो यह सूर्य किरणों से प्रभावित जल, दूध, अन्नादि पदार्थ मैं देता हूं।

सं ते शीष्णः कपालानि हृदयस्य च यो विधुः। उद्यन्नादित्य रश्मिभिः शीर्ष्णो रोगमनीनशोंग भेदमशीशमः।

(अथर्व. 9/8/22)

अर्थ : हे रोगी तेरे सिर के कपाल सम्बन्धी रोग और हृदय की जो विशेष प्रकार की पीड़ा थी वह अब शांत हो गई है। हे सूर्य! तू उदय होता हुआ ही अपनी किरणों से सिर के रोग को नाश करता है और शरीर के अंगों को तोड़ने वाली तीव्र वेदना को भी शांत कर देता है। इस प्रकार समस्त रोगों को सूर्य उदय होता हुआ अपनी किरणों से दूर करता है।

धूप स्नान करते समय रोगी का शरीर नग्न होना चाहिए। जब सूर्य की किरणें त्वचा पर पड़ती है तो उससे विशेष लाभ होता है। सिर को सदैव धूप लगने से बचाना चाहिए। छाजन(एक्जिमा) रोग में धूप स्नान से बहुत लाभ होता है। यदि शरीर का कोई प्रधान अंग निर्बल हो गया हो, तो धूप स्नान से उन्हें लाभ होता है। कुछ रोगों में धूप स्नान मना भी है- यथा सभी प्रकार के ज्वर में। इस तरह से वेदों में नैसर्गिक सूर्य क्रिया चिकित्सा का स्पष्ट वर्णन है।

जो देव, प्रकाश सूर्य की प्रातःकालीन रक्त वर्ण की किरणें हैं और जो लाल वर्ण की कपिला गायें हैं या उगने वाली औषधियां हैं उनके भीतर विद्यमान कान्तिजनक चमक को और दीर्घायु जनक उन द्वारा तुझको सब प्रकार से परिपुष्ट करते हैं। हृदयरोग के सम्बन्ध में वाव्यटूट अष्ठग संग्रह हृदय रोग निदान में लिखते हैं, पांच प्रकार का हृदय रोग होता है वातज, पितज, कफज, त्रिदोषज और कृमियों से। इनके भिन्न-भिन्न लक्षण प्रकट होते हैं। इसी प्रकार पांडुरोग का एक विकृत रूप हलीमक है। उसमें शरीर हरा, नीला, पीला हो जाता है। उसके सिर में चक्कर, प्यास, निद्रानाश, अजीर्ण और ज्वर आदि दोष अधिक हो जाते हैं। इनकी चिकित्सा में रोहिणी और हारिद्रव और गौक्षीर का प्रयोग दर्शाया गया है।

महर्षि स्वामी दयानन्द का पर्यावरण चिंतन

महर्षि स्वामी दयानन्द जी अपनी पुस्तक गौ करुणानिधि नामक पुस्तक पर्यावरण की रक्षा के विषय में लिखते हैं- इसलिए आर्यावर्ततीय राजा, महाराजा, प्रधान और धनाढ्य लोग आधी पृथ्वी में जंगल रखते थे कि जिससे पशु और पक्षियों की रक्षा होकर औषधियों का सार दूध आदि पवित्र पदार्थ उत्पन्न हों, जिनके खाने-पीने से आरोग्य, बुद्धि-बल, पराक्रम आदि सदगुण बढ़ें।

वृक्षों के अधिक होने से वर्षा-जल और वायु में आर्द्रता और शुद्धि अधिक होती है। पशु और पक्षी आदि के अधिक होने से खाद भी अधिक होता है।

परन्तु इस समय के मनुष्यों का इससे विपरीत व्यवहार है कि जंगलों को काट और कटवा डालना, पशुओं को मार और मरवाकर खाना और विष्टा आदि का खाद खेतों में डाल अथवा डलवा कर रोगों की वृद्धि करके संसार का अहित करना, स्वप्रयोजन साधना और परप्रयोजयन पर ध्यान न देना इत्यादि काम उल्टे हैं।

महात्मा गांधी और गौरक्षा

डॉ. विवेक आर्य

बात 1947 के दौर की है। देश में विभाजन की चर्चा आम हो गई थी। स्पष्ट था कि विभाजन का आधार धर्म बनाम मजहब था। भारतीय विधान परिषद के अध्यक्ष डॉ राजेंद्र प्रसाद के पास देश भर से गौवध निषेध आज्ञा का प्रस्ताव पारित करने के लिए पत्र और तार आने लगे। महात्मा गांधी ने 25 जुलाई की प्रार्थना सभा में इसी इस विषय पर बोलते हुए कहा- राजेंद्र बाबू ने मुझको बताया कि उनके यहां करीब 50 हजार पोस्ट कार्ड, 25-30 हजार पत्र और कई हजार तार आ गये हैं। इनमें गौ हत्या कानूनन बंद करने के लिये कहा गया है।

आखिर इतने खत और तार क्यों आते हैं? इनका कोई असर तो हुआ ही नहीं है। हिंदुस्तान में गौहत्या रोकने का कोई कानून बन ही नहीं सकता। हिन्दुओं को गाय का वध करने की मनाही है इसमें मुझे कोई शक नहीं हैं। मैंने गौ सेवा का व्रत बहुत पहले से ले रखा है। मगर जो मेरा धर्म है वही हिंदुस्तान में रहने वाले सब लोगों का भी हो यह कैसे हो सकता है? इसका मतलब तो जो लोग हिन्दू नहीं हैं उनके साथ जबरदस्ती करना होगा।

हम चीख-चीख कर कहते आये हैं कि जबरदस्ती से कोई धर्म नहीं चलाना चाहिये। जो आदमी अपने आप गोकशी रोकना चाहता उसके साथ में कैसे जबरदस्ती करूं कि वह ऐसा करें? अगर हम धार्मिक आधार पर यहां गौहत्या रोक देते हैं और पाकिस्तान में इसका उलटा होता है तो क्या स्थिति रहेगी? मान लीजिये वे

गोवध निषेध और मूर्तिपूजा निषेध की कोई तुलना नहीं हो सकती। गोवध निषेध की मांग धार्मिक दृष्टि से नहीं किन्तु आर्थिक और संपत्ति से भी की जा रही है क्योंकि गोवध के कारण गोवंश का नाश होने से दूध घी आदि उपयोगी पौष्टिक वस्तुओं की कमी से हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख और सभी को हानि उठानी पड़ती है। बाबर, हुमायूं, अकबर, शाह आलम आदि ने अपने राज्य में इसे बंद किया था। गौवध निषेध विषयक प्रबल आंदोलन अवश्य जारी रखना चाहिए।

यह कहें कि तुम मूर्तिपूजा नहीं कर सकते क्योंकि यह शरीयत के अनुसार वर्जित है। इसलिए मैं तो यह कहूंगा कि तार और पत्र भेजने का सिलसिला बंद होना चाहिये। इतना पैसा इन पर बेकार फेंक देना मुनासिब नहीं है। मैं तो आपके मार्फत सारे हिन्दुस्तान को यह सुनाना चाहता हूं कि वे सब तार और पत्र भेजना बंद कर दें। (हिंदुस्तान 26 जुलाई, 1947)। 'हिन्दू धर्म में गोवध करने की जो मनाई की गई है वह हिन्दुओं के लिए है सारी दुनियां के लिए नहीं। (हिंदुस्तान 10 अगस्त 1947)' 'अगर आप मजहब के आधार पर हिंदुस्तान में गोकशी बंद कराते हैं तो फिर पाकिस्तान की सरकार इसी आधार पर मूर्तिपूजा क्यों नहीं बंद करा सकती! (हरिजन सेवक 10 अगस्त 1947)।'

गांधी जी के गौवध निषेध संबंधित बयानों की समीक्षा आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान पं धर्मदेव विद्यामार्तण्ड ने सार्वदेशिक पत्रिका के अगस्त 1947 के सम्पादकीय में इन शब्दों में की-

माहात्मा जी के उपर्युक्त वक्तव्य से हम नितांत असहमत हैं। प्रजा जिस बात को देशहित के लिए अत्यावश्यक समझती है क्या अपने मान्य नेताओं से पत्र, तार आदि द्वारा उस विषयक निवेदन करने का भी उसे अधिकार नहीं है? क्या देश के मान्य नेताओं का जिन के हाथों स्वतन्त्र भारत के शासन की बागडोर आई है यह कहना कि प्रजा द्वारा प्रेषित हजारों तारों और पत्रों का कोई प्रभाव तो हुआ ही नहीं सचमुच आस्चर्यजनक है। क्या प्रजा की मांग की ऐसी उपेक्षा करना देश के मान्य नेताओं को उचित है? हिंदुस्तान में गौहत्या रोकने का कोई कानून बन ही नहीं सकता। ऐसा महात्मा जी का कहना कैसे उचित हो सकता है? क्या विधान परिषद् की सारी शक्ति महात्माजी ने अपने हाथ में ले रखी है जो वे ऐसी घोषणा कर सकें? यह युक्ति देना कि ऐसा करने से हिन्दुओं के अतिरिक्त दूसरे लोगों पर जबर्दस्ती होगी सर्वथा अशुद्ध है। इसके आधार

पर तो किसी भी विषय में कोई कानून नहीं बनना चाहिये क्योंकि बाल्यविवाह, अस्पृश्यता, मद्यपान निषेध, चोरी निषेध, व्यभिचार निषेध आदि विषयक किसी भी प्रकार के कानून बनाने से उन लोगों पर एक तरह से जबर्दस्ती होती है जो इन को मानने वा करने वाले हैं। जिससे समाज और देश को हानि पहुंचती है उसे कानून का आश्रय लेकर भी अवश्य बंद करना चाहिये। स्वयं महात्मा गांधीजी की अनुमति और समर्थन में गत वर्ष 11 फरवरी को वर्धा में जो गौरक्षा सम्मलेन हुआ था उसमें एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया था कि 'इस सम्मेलन का निश्चित विचार है कि भारत के राष्ट्रीय धन के दृष्टीकौन से गौओं, बैलों और बछड़ों का वध अत्यंत हानिकारक है इसलिए यह सम्मेलन आवश्यक समझता है कि गौओं, बछड़ों और बैलों का वध कानून द्वारा तुरंत बंद कर दिया जाए। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं कि जो महात्माजी गत वर्ष तक गोवध को कानून द्वारा बन्द कराने के प्रबल समर्थक थे वही अब कहें कि इस विषय में कानून नहीं बनाना चाहिए।

गोवध निषेध और मूर्तिपूजा निषेध की कोई तुलना नहीं हो सकती। गोवध निषेध की मांग धार्मिक दृष्टि से नहीं किन्तु आर्थिक और संपत्ति से भी की जा रही है क्योंकि गोवध के कारण गोवंश का नाश होने से दूध घी आदि उपयोगी पौष्टिक वस्तुओं की कमी से हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख और सभी को हानि उठानी पड़ती है। बाबर, हुमायूं, अकबर, शाह आलम आदि ने अपने राज्य में इसे बंद किया था। गोवध निषेध के समान कोई चीज पाकिस्तान सरकार कर सकती है तो वह सुअर के मांस के सेवन और बिक्री पर प्रतिबंध है। इससे कोई हानि न होगी यदि उसने ऐसा प्रतिबंध लगाना उचित समझा। गौवध निषेध विषयक प्रबल आंदोलन अवश्य जारी रखना चाहिए।

इस लेख से यही सिद्ध होता है कि गांधी जी सदा हिन्दू हितों की अनदेखी करते रहे। खेद जनक बात यह है कि उनकी तुष्टिकरण उनके बाद की सरकारें भी ऐसे हो लागू करती रही। नेहरू जी की सरकार ने और 1966 में प्रबल आंदोलन के बाद इंदिरा गांधी ने भी गोवध निषेध कानून लागू नहीं किया। मोदी जी को भी 6 वर्ष हो गए है। यह कानून कब लागू होगा ? हिन्दुओं में एकता की कमी इस समस्या का मूल कारण है।

■■■

हिन्दुओं की अज्ञानता

वर्तमान में हिन्दू समाज ने सबसे ज्यादा प्रगति अज्ञानता और अंधविश्वास के रूप में की हैं। एक समय मंदिरों में इतना धन इक्कट्ठा कर दिया गया कि कोई भी मुस्लिम आक्रांता हमला करके तिनके के समान की रक्षा पंक्ति को तोड़ देता और मंदिरों को लूट कर मूर्तियों को अपमानित करता था। अच्छा होता अगर उन मूर्तियों और मंदिरों को भव्य बनाने के स्थान पर उनसे हिन्दू सैनिकों और फौजों को शक्तिशाली बनाया जाता। जिससे की शत्रु को मुहतोड़ उत्तर दिया जाता।

तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्णाटक, केरला आज ईसाई धर्मांतरण के गढ़ बने हुए हैं। ईसाई लोग धन के बल पर गरीब हिन्दुओं का रोटी, रोजगार, चिकित्सा सुविधा और शिक्षा देकर धर्म परिवर्तन करते हैं। हिन्दू समाज कबूतर की भांति आंख बंद कर मंदिरों में अपने धन और सामर्थ्य को व्यय करने में लगा हुआ हैं। अभी-अभी वेल्लोर नामक स्थान में दक्षिण भारत में लगभग 500 करोड़ की लागत से सोने का स्वर्ण मंदिर बनाया गया।

हमारा उनसे एक खुला प्रश्न है कि किसी भी हिन्दू धर्मशास्त्र का प्रमाण प्रस्तुत करे जिसमे यह कहा गया है कि ईश्वर उस मंदिर में पूजा करने से अधिक प्रसन्न होता है जहां उनकी सोने की हीरे-जड़ित मूर्ति हो और उस मंदिर की दीवारों पर सोने की परत चढ़ी हो। इस अंधविश्वास की पराकाष्ठा तो तब हो गई जब वेम्ब्ली, इंग्लैंड में हिन्दुओं ने एक मंदिर में मदर टेरेसा जिसने अपना पूरा जीवन हिन्दुओं को ईसाई बनाने में लगाया की मूर्ति स्थापित कर दी।

मेरा सभी हिन्दू भाइयों से अनुरोध है कि अपनी शक्ति और सामर्थ्य को धर्म, देश और जाति के कल्याण में लगायें। हिन्दू समाज को वेदों के ज्ञान के प्रचार-प्रसार में अपना धन व्यय करना चाहिए। धर्मांतरित हो रहे हिन्दुओं की घर वापसी में सहयोग करना चाहिए। लव जिहाद के विरुद्ध जाग्रति लाने में अपना सहयोग करना चाहिए। छुआछूत को मिटाने में अपना सहयोग करना चाहिए। अन्यथा जैसे पूर्व में विधर्मी आक्रांताओं ने हिन्दू मंदिरों का विध्वंश किया था उसी प्रकार इनका भी कर देंगे। अपने इतिहास से हिन्दुओं ने कुछ नहीं सीखा।

वैदिक धर्म दुःखों से रक्षार्थ सत्य को धारण करने की प्रेरणा देता है

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

मनुष्य का जो ज्ञान होता है वह सत्य व असत्य दो कोटि का होता है। मनुष्य के कर्म भी दो कोटि यथा सत्य व असत्य स्वरूप वाले हाते हैं। अनेक स्थितियों में मनुष्य को सत्य अपनाने से क्षणिक व सामयिक हानि होती दिखती है और असत्य का आचरण करने से लाभ होता दिखता है। बहुत से मनुष्य अपने लाभ के लिये सत्य को छोड़ असत्य में प्रवृत्त हो जाते हैं। ऐसा करना वैदिक धर्म की मान्यताओं एवं सिद्धांतों की दृष्टि से उचित नहीं होता। इसका कारण यह है कि परमात्मा सत्य में स्थित हैं। वह सत्य-चित्त-आनन्दस्वरूप हैं।

परमात्मा असत्य से युक्त कोई काम नहीं करते और न चाहते हैं कि कोई मनुष्य असत्य का आचरण, व्यवहार व कर्मों को करे। सत्य व्यवहार करने वाले मनुष्य सत्य के आचरण के परिणामस्वरूप ईश्वर से सुख पाते हैं और असत्य का आचरण करने वाले दुःख पाते हैं। यह वैदिक सत्य सिद्धांत है। इसकी अनेक प्रमाणों एवं घटनाओं से पुष्टि होती है। अतः मनुष्यों को सत्य का ही आचरण करना चाहिये। जो मनुष्य अपनी अविद्या, स्वार्थ व प्रयोजन की सिद्धि, हठ व दुराग्रह आदि से सत्य को छोड़ असत्य को अपनाते हैं व अपनाये हुए हैं, उन मनुष्यों को परमात्मा की व्यवस्था लोक-परलोक व जन्म-परजन्म में सुख के स्थान पर दुःख मिलता है। मनुष्य को असत्य व्यवहार तथा अशुभ कार्य करने से तत्काल कुछ लाभ होता दिखता है, अतः अविवेकी व अज्ञान से युक्त मनुष्य ऐसे कर्मों को करते हैं। इससे उन्हें इष्ट लाभ भी प्राप्त हो जाता है परन्तु इस कर्म का जब परमात्मा से फल प्राप्त होता है तो उसे अनेक प्रकार के दुःख भोगने पड़ते हैं।

इस कारण से किसी भी मनुष्य को जीवन में असत्य विचार, विश्वास, कर्म व निर्णय नहीं करने चाहिये अन्यथा जन्म व जन्मान्तर में असत्य व अशुभ कर्मों का फल भोगना होगा। वैदिक सिद्धान्त भी यही कहता है कि 'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं' अर्थात् मनुष्य को अपने किये हुए शुभ व अशुभ कर्म के फलों का निश्चय ही भोग करना होता है। इस सत्य सिद्धान्त को जानकर मनुष्य को असत्य का व्यवहार कदापि नहीं करना चाहिये।

ऋषि दयानन्द जी वेदों के मर्मज्ञ विद्वान व ऋषि थे। उन्होंने वेद प्रचार हेतु स्थापित संगठन आर्यसमाज के नियम बनाये जिसमें चौथे नियम में विधान किया कि 'मनुष्य को सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।' सत्य पर बल देते हुए उन्होंने पांचवे नियम में कहा है कि मनुष्य को अपने सभी काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिये। उसे सत्य से युक्त कार्यों को करना चाहिये और

परमात्मा असत्य से युक्त कोई काम नहीं करते और न चाहते हैं कि कोई मनुष्य असत्य का आचरण, व्यवहार व कर्मों को करे। सत्य व्यवहार करने वाले मनुष्य सत्य के आचरण के परिणामस्वरूप ईश्वर से सुख पाते हैं और असत्य का आचरण करने वाले दुःख पाते हैं। यह वैदिक सत्य सिद्धांत है। इसकी अनेक प्रमाणों एवं घटनाओं से पुष्टि होती है। अतः मनुष्यों को सत्य का ही आचरण करना चाहिये। जो मनुष्य अपनी अविद्या, स्वार्थ व प्रयोजन की सिद्धि, हठ व दुराग्रह आदि से सत्य को छोड़ असत्य को अपनाते हैं व अपनाये हुए हैं, उन मनुष्यों को परमात्मा की व्यवस्था लोक-परलोक व जन्म-परजन्म में सुख के स्थान पर दुःख मिलता है। मनुष्य को असत्य व्यवहार तथा अशुभ कार्य करने से तत्काल कुछ लाभ होता दिखता है, अतः अविवेकी व अज्ञान से युक्त मनुष्य ऐसे कर्मों को करते हैं। इससे उन्हें इष्ट लाभ भी प्राप्त हो जाता है परन्तु इस कर्म का जब परमात्मा से फल प्राप्त होता है तो उसे अनेक प्रकार के दुःख भोगने पड़ते हैं। इस कारण से किसी भी मनुष्य को जीवन में असत्य विचार, विश्वास, कर्म व निर्णय नहीं करने चाहिये अन्यथा जन्म व जन्मान्तर में असत्य व अशुभ कर्मों का फल भोगना होगा।

असत्य से युक्त कार्यों को नहीं करना चाहिये। आर्यसमाज का एक अन्य महत्वपूर्ण नियम यह भी है कि मनुष्य को अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। सत्य का आचरण करने से ही देश व समाज में अविद्या का नाश हो सकता है तथा विद्या की वृद्धि होती है। असत्य सदैव अविद्या से युक्त तथा विद्या से वियुक्त रहता है।

विद्या से ही मनुष्य की उन्नति व उत्कर्ष होता है। अविद्या से मनुष्य पतन में गिरता है। सत्य को अपना कर तथा असत्य को छोड़ने से ही देश व समाज में सुख, शान्ति व उन्नति हो सकती है। ऐसा होने पर भी मनुष्य व बहुत से ज्ञानी व विद्वान भी असत्य आचरण करना छोड़ते नहीं है। अनेक ज्ञानी व विद्वानों का सत्य आचरण की उपेक्षा करना आश्चर्य की बात है। यदि संसार में सभी लोग सत्य के ग्रहण करने में दृण निश्चय हो जायें तो पूरे विश्व में धार्मिक व सामाजिक एकता स्थापित हो सकती है। एकता न होने का कारण असत्य का व्यवहार तथा अविद्या ही है। इसी कारण ईश्वर के साक्षातकर्ता व साक्षात्दर्शी ऋषि दयानन्द जी ने सत्य व विद्या के महत्व को आर्यसमाज के नियमों में रेखांकित किया है।

वेद परमात्मा का ज्ञान है। यह ज्ञान सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सत्य-चित्त-आनन्दस्वरूप परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को दिया था। इस ज्ञान को सर्वान्तर्यामी परमेश्वर ने इन ऋषियों की आत्मा में अन्त:प्रेरणा कर स्थिर किया था। परमात्मा ने ही इन ऋषियों को वेदों की भाषा के ज्ञान सहित वेदों के मंत्रों के अर्थ भी बताये थे।

इनके द्वारा ब्रह्माजी को ज्ञान देने सहित वेद अध्ययन अध्यापन की परम्परा सभी मनुष्यों में आरम्भ हुई थी। महाभारत से पूर्व विश्व के सभी लोग एक वेद मत को ही मानते व इसका ही आचरण करते थे। इसका एक कारण महाभारत से पूर्व देश देशान्तर में ऋषि परम्परा का प्रचलित होना था। इस वैदिक काल में संसार में धर्म विषयक अविद्या पर नियंत्रण था। सर्वत्र विद्या व वेदों का प्रकाश हमारे ऋषि व उनके शिष्य करते थे।

वेदों की सभी मान्यतायें सत्य पर आधारित एवं सत्य सिद्धान्तों से पुष्ट हैं। ऋषि दयानन्द ने वेद व वैदिक मान्यताओं की सत्यता को सिद्ध करने के लिये ही वेद प्रचार किया और इसको स्थायीत्व प्रदान करने के लिये उन्होंने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, ऋग्वेद आंशिक तथा यजुर्वेद सम्पूर्ण वेदभाष्य, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, पंचमहायज्ञविधि, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि आदि ग्रंथों का प्रणयन किया। इन ग्रंथों में सर्वत्र सत्य ही विद्यमान है जिनका अध्ययन कर कोई भी मनुष्य सर्वांश में सत्य से परिचित होकर सत्य आचरण व व्यवहार में प्रवृत्त हो सकता है। ऐसा करके ही आर्यसमाज को स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, पं. चमूपति तथा पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय आदि सत्याचरण करने वाले अनेक महानपुरुष व महात्मा प्राप्त हुए थे। ऋषि दयानन्द और इन महापुरुषों के जीवन की घटनाओं का अध्ययन करने पर इनका जीवन सत्याचरण से युक्त सिद्ध होता है और इनसे पाठकों को सत्याचरण करने की प्रेरणा मिलती है।

वैदिक धर्म में मनुष्य को अपने प्रत्येक कर्म को सत्य पर आधारित करने की प्रेरणा मिलती है। उसे कहा जाता है कि वह मन, वचन व कर्म से सत्य का आचरण व पालन करे। सत्याचरण ही धर्म का पर्याय है। जहां सत्य का आचरण नहीं होता वहां धर्म नहीं होता। सत्य में शाकाहार का सेवन भी जुड़ा हुआ है। शाकाहार सत्य से युक्त आचरण है और मांसाहार असत्य से युक्त एवं निन्दित कार्य होता है।

➡➡

महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज के बारे में महापुरुषों के विचार

- महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषों में से थे जिन्होंने स्वराज्य की प्रथम घोषणा करते हुए, आधुनिक भारत का निर्माण किया। हिन्दू समाज का उद्धार करने में आर्य समाज का बहुत बड़ा हाथ है।

  – नेता जी सुभाष चन्द्र बोस

- यदि हम महर्षि दयानन्द की नीतियों पर चलते तो देश कभी नही बंटता। आज देश में जो भी कार्य चल रहे है। उनका मार्ग स्वामी जी ने वर्षों पूर्व बता दिये थे।

  – सरदार वल्लभ भाई पटेल

- महर्षि दयानन्द महान नायक और क्रांतिकारी महापुरुष थे। उन्होंने स्वराज्य और स्वदेशी की ऐसी लहर चलाई कि जिससे इंडियन नेशनल कांग्रेस के निर्माण की पृथ्ठभूमि तैयार हो गयी।

  –लाल बहादुर शास्त्री

कब्र पूजा : मुर्खता अथवा अंधविश्वास

समाचार पत्रों में देश के प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा अजमेर में दरगाह शरीफ पर चादर चढ़ाने के लिए बीजेपी के वरिष्ठ नेता मुख्तार अब्बास नकवी को अजमेर भेजने एवं उसके साथ अपना पैगाम भेजने का समाचार छपा था। पूर्व में भी बॉलीवुड के कई प्रसिद्ध अभिनेता-अभिनेत्री अथवा क्रिकेट के खिलाड़ी अथवा राजनेता चादर चदाकर अपनी फिल्म को सुपर हिट करने की अथवा आने वाले मैच में जीत की अथवा आने वाले चुनावों में जीत की दुआ मांगता रहा हैं। भारत की नामी गिरामी हस्तियों के दुआ मांगने से साधारण जनमानस में एक भेड़चाल सी आरंभ हो गयी है कि अजमेर में दुआ मांगने से बरकत हो जाएगी, किसी की नौकरी लग जाएगी, किसी के यहां पर लड़का पैदा हो जायेगा, किसी का कारोबार नहीं चल रहा हो तो वह चल जायेगा, किसी का विवाह नहीं हो रहा हो तो वह हो जायेगा।

कुछ सवाल हमें अपने दिमाग पर जोर डालने को मजबूर कर रहे हैं जैसे कि यह गरीब नवाज कौन थे? कहां से आये थे? इन्होंने हिंदुस्तान में क्या किया और इनकी कब्र पर चादर चढ़ाने से हमे सफलता कैसे प्राप्त होती है?

गरीब नवाज भारत में लूटपाट करने वाले , हिन्दू मंदिरों का विध्वंश करने वाले, भारत के अंतिम हिन्दू राजा पृथ्वीराज चौहान को हराने वाले व जबरदस्ती इस्लाम में धर्म परिवर्तन करने वाले मुहम्मद गौरी के साथ भारत में शांति का पैगाम लेकर आये थे। पहले वे दिल्ली के पास आकर रुके फिर अजमेर जाते हुए उन्होंने करीब 700 हिन्दुओं को इस्लाम में दीक्षित किया और अजमेर में वे जिस स्थान पर रुके उस स्थान पर तत्कालीन हिन्दू राजा पृथ्वीराज चौहान का राज्य था। ख्वाजा के बारे में चमत्कारों की अनेकों कहानियां प्रसिद्ध है की जब राजा पृथ्वीराज के सैनिकों ने ख्वाजा के वहां पर रुकने का विरोध किया क्योंकि वह स्थान राज्य सेना के ऊंटों को रखने का था तो पहले तो ख्वाजा ने मना कर दिया फिर क्रोधित होकर शाप दे दिया की जाओ तुम्हारा कोई भी ऊंट वापस उठ नहीं सकेगा। जब राजा के कर्मचारियों ने देखा की वास्तव में ऊंट उठ नहीं पा रहे है तो वे ख्वाजा से माफी मांगने आये और फिर कहीं जाकर ख्वाजा ने ऊंटों को दुरुस्त कर दिया। दूसरी कहानी अजमेर स्थित आनासागर झील की हैं। ख्वाजा अपने खादिमो के साथ वहां पहुंचे और उन्होंने एक गाय को मारकर उसका कबाब बनाकर खाया। कुछ खादिम पनसिला झील पर चले गए कुछ आनासागर झील पर ही रह गए। उस समय दोनों झीलों के किनारे करीब 1000 हिन्दू मंदिर थे, हिन्दू ब्राह्मणों ने मुसलमानों के वहां पर आने का विरोध किया और ख्वाजा से शिकायत कर दी।

ख्वाजा ने तब एक खादिम को सुराही भरकर पानी लाने को बोला। जैसे ही सुराही को पानी में डाला तभी दोनों झीलों का सारा पानी सूख गया। ख्वाजा फिर झील के पास गए और वहां स्थित मूर्ति को सजीव कर उससे कलमा पढ़वाया और उसका नाम सादी रख दिया। ख्वाजा के इस चमत्कार की सारे नगर में चर्चा फैल गई। पृथ्वीराज चौहान ने अपने प्रधानमंत्री जयपाल को ख्वाजा को काबू करने के लिए भेजा। मंत्री जयपाल ने अपनी सारी कोशिश कर डाली पर असफल रहा और ख्वाजा नें उसकी सारी शक्तिओं को खत्म कर दिया। राजा पृथ्वीराज चौहान सहित सभी लोग ख्वाजा से क्षमा मांगने आये। काफी लोगो नें इस्लाम कबूल किया पर पृथ्वीराज चौहान ने इस्लाम कबूलने इंकार कर दिया। तब ख्वाजा नें भविष्यवाणी करी की पृथ्वीराज को जल्द ही बंदी बना कर इस्लामिक सेना के हवाले कर दिया जायेगा। निजामुद्दीन औलिया जिसकी दरगाह दिल्ली में स्थित हैं ने भी ख्वाजा का स्मरण करते हुए कुछ ऐसा ही लिखा है।

बुद्धिमान पाठकगन स्वयं अंदाजा लगा सकते हैं की इस प्रकार के करिश्मो को सुनकर कोई मूर्ख ही इन बातों पर विश्वास ला सकता है। भारत में स्थान-स्थान पर स्थित कब्रे उन मुसलमानों की हैं जो भारत पर आक्रमण करने आये थे और हमारे वीर हिन्दू पूर्वजों ने उन्हें अपनी तलवारों से परलोक पंहुचा दिया था। ऐसी ही एक कब्र बहरीच गोरखपुर के निकट स्थित है। यह कब्र गाजी मियां की है। गाजी मियां का असली नाम सालार गाजी मियां था एवं उनका जन्म अजमेर में हुआ था। इस्लाम में गाजी की उपाधि किसी काफिर यानि गैर मुसलमान को कत्ल करने पर मिलती थी। गाजी मियां के मामा मुहम्मद गजनी ने ही भारत पर आक्रमण करके गुजरात स्थित प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर का विध्वंश किया था। कालांतर में गाजी मियां अपने मामा के यहां पर रहने के लिए गजनी चला गया।

■■ डॉ. विवेक आर्य

संस्कृत भाषाया: महत्वम्

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

व्याकरण सम्बन्धि दोषरहिता व्यवस्थितक्रिया कारकसमन्विता या भाषा सा संस्कृत भाषा कथ्यते। सम्प्रति अस्माकं देशे अनेका: भाषा: प्रचलिता: सन्ति। यथा– हिन्दी, बंगाली, मराठी, गुजराती, उड़िया, आसामी, प्रभृतय:। सर्वासां भाषाणां जननी संस्कृतभाषा एव अस्ति। संस्कृतभाषाया एव एतासां भाषाणाम् उत्पत्ति:।

अस्माकं भारतीयानां समस्तं साहित्यमपि संस्कत भाषायामेव वर्तते। अस्माकं सर्वप्राचीन ग्रंथाश्चत्वारो वेदा:, उपवेदा:, वेदाग्नि, दर्शनशास्त्राणि, धर्मशास्त्रम, अर्थशास्त्रम्, कामशास्त्रम्, पुराणानि, उपपुराणानि, काव्यम्, नाटकञ्चेत्यादि समग्रमपि विशालं ज्ञानविज्ञान वैभवं संस्कृतभाषायामेव निबद्ध वर्तते। वाह्यसाहित्यातिरिक्तं जैनधर्मस्य बौद्धधर्मस्य च महत्वपूर्णा: ग्रंथा: संस्कृतभाषामेव लिखिता: सन्ति।

भारतस्य सम्पूर्ण इतिहास: संस्कृतभाषायामेव निबद्धो वर्तते। देवासुराणाम् आख्यानम्, अवताराणां कथा:, महापुरुषाणां चरित्राणि, राजनैतिका वृतान्ता:, वंशोपवंशीनां विस्तृतं वर्णनं भारतीयानां विदेशेषु गमनं, स्वसंस्कृते: प्रचरश्चेति सर्वमपि भारतीयमितिवृत्तं संस्कृतस्यैव रामायण महाभारतपुराणप्रभृतिषु ग्रंथेषु समुल्लिखितं वर्तते।

महर्षिवाल्मीकिविरचितस्य रामायणस्य द्वैपायनवेद व्यासविरचितस्य महाभारतस्य च लोकोत्तरं महत्वं वर्तते संसारे साहित्ये च। संस्कृतम् ऋते भारतीयेति वृत्तपरिज्ञानाय न अन्य: कोऽपि पन्था विद्यते।

एवञ्च भारतीयानां धर्म:, संस्कृति: सभ्यता, इतिहास:, सदाचारादीनां विषयाणां कला, ज्ञानम्, रीति: नीति:, किमपि ज्ञानं संस्कृतं विना नैव भवति। अनेनैव कारणेन भारतीय जनताया: कृते संस्कृतशिक्षाया महती आवश्कता वर्तते। यत: भारतस्य प्राणभूते द्वे विद्यते–संस्कृतं संस्कृतिश्च। अत एवोक्तम्– 'भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा' इति।

यस्य संस्कृतस्य ज्ञानं न भवति, तस्य भारतीयताया: किमपि ज्ञानं नैव भविष्यति। भारतराष्ट्रस्य विभिन्नप्रदेशेषु सांस्कृतिकदृष्टया ऐक्यसंरक्षणाय संस्कृतस्य महती आवश्यकता वर्तते।

कालीदास:, अश्वघोष:, भवभूति:, भास:, माघ: धन्वंतरिप्रभृतयो महाकवय: संस्कृतभाषायामेव ग्रंथान् निर्माय धन्या: सञ्जाता:। संसार साहित्ये अभिज्ञान शाकुंतल मेघदूतादिकाव्यानां महत्वं श्रीमद्भगवद् गीतावद् वर्तते। यद्यपीयं संस्कृतभाषा पूर्व विदेशीयै: उपेक्षिता, परमधुना स्वतंत्रतायां प्राप्तायां सर्वेऽपि भारतीया: अस्या: भाषाया उपयोगित्वं महत्वश्च अंगीकुर्वन्ति, भारतस्य कृते इदं शोभनं वर्तते। यो राष्ट्र: स्वकीयस्य साहित्य स्वकीयाया: संस्कृते: च संरक्षणं संवर्द्धनं च नैव करोति, स: राष्ट्र: कदापि समुन्नतिं कर्तु न शक्नोति। अनया दृष्ट्या सर्वे भारतराष्ट्रस्य कर्णधारा: सर्वे भारतीयाश्च संस्कृत भाषाया: महत्वनम् उपयोगित्वश्चविस्मृत्य प्रचाराय प्रसाराय च प्रयत्नं कुर्वन्तु, इमां संस्कृतभाषां राष्ट्रभाषापदे संस्थापयन्तु च।

नान्यभाषासु यच्छोभनं वाङमयं नैव वर्द्धिष्णुता नेष्टकार्यार्हता।
सर्वकार्य-क्षमं सर्वसिद्धयाञ्चितो राष्ट्रभाषापदे संस्कृतं योज्यताम्॥

आर्योद्देश्यरत्नमाला

- **पंडित :** जो सत्–असत् को विवेक से जानने वाला, धर्मात्मा, सत्यवादी, सत्यप्रिय, विद्वान और सबका हितकारी है, उसको 'पंडित' कहते हैं।
- **मूर्ख :** जो अज्ञान, हठ, दुराग्रहादि दोष सहित है, उसको 'मूर्ख' कहते हैं।
- **ज्येष्ठ कनिष्ठ व्यवहार :** जो बड़े और छोटों से यथायोग्य परस्पर मान्य करना है, उसको 'ज्येष्ठ कनिष्ठ व्यवहार' कहते हैं।
- **चोरी त्याग :** जो स्वामी की आज्ञा के बिना किसी के पदार्थ को ग्रहण करता है वह 'चोर' और उसका छोड़ना, 'चोरी त्याग' कहाता है।

‘स्वामी स्वतंत्रानंद महर्षि दयानन्द के प्रमुख योग्यतम शिष्य’

स्वामी स्वतंत्रानंद
स्मृति : 4 अप्रैल

स्वामी स्वतंत्रानंद जी महाराज आर्यसमाज के अनूठे संन्यासी थे। आपने अमृतसर के निकट सन् 1936 में दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापना की और वेदों का दिगदिगन्त प्रचार कर स्वयं को इतिहास में अमर कर दिया। आपके बाद आपके प्रमुख शिष्य स्वामी सर्वानन्द सरस्वती इसी मठ के संचालक व प्रेरक रहे। स्वामी सर्वानन्द जी लिखते हैं कि पूज्यपाद सन्त शिरोमणि स्वामी स्वतंत्रानन्द जी महाराज इतिहास के एक जाने-माने विद्वान् थे। प्रो. राजेंद्र ‘जिज्ञासु’ ने पूज्य स्वामी जी महाराज का जीवन-चरित लिखा है और ‘इतिहास दर्पण’ नाम से स्वामी जी महाराज के प्रेरणाप्रद लेखों की खोज, संकलन व सम्पादन किया है। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज प्रतिवर्ष तीन बार दीनानगर मठ में कथा किया करते थे। सदा नई-नई घटनाएं और नये-नये उदहरण दिया करते थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दिनों में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने हरियाणा का भ्रमण किया।

हरियाणा सैनिक भर्ती का बहुत बड़ा क्षेत्र है। श्री स्वामीजी ने हरियाणा के जवानों को देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाने की प्रेरणा दी थी। उनके देश-प्रम को उबारा। तब देश के अन्दर ‘भारत छोड़ो’ आन्दोलन चल रहा था और देश से बाहर आजाद हिन्द सेना देश को गुलामी के बन्धन से मुक्त करने के लिए लड़ रही थी। श्री महाराज की इस ऐतिहासिक यात्रा में श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती व आचार्य भगवानदेव जी, परवर्ती नाम स्वामी ओमानन्दसरस्वती उनके साथ रहे। इनका कहना था कि स्वामी जी महाराज प्रतिदिन नया-नया इतिहास और नई-नई घटनाएं सुनाते थे।

विख्यात शिक्षाविद् विद्यामार्तण्ड आचार्य प्रियव्रतजी कहा करते थे कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को आर्यसमाज के इतिहास की छोटी-बड़ी घटनाओं का जितना ज्ञान था उतना और किसी को नहीं। आश्‍चर्य इस बात पर होता था कि यह सारा ज्ञान उन्हें स्मरण वा कंठस्थ था। डायरी या नोट बुक देखने की कभी आवश्यकता नहीं पड़ती थी। भारत के प्राचीन इतिहास की बातें भी स्वामीजी महाराज यदा-कदा सुनाया करते थे। एक बार प्रसिद्ध इतिहासकार श्री जयचन्द्र विद्यालंकार दीनानगर मठ, निकट अमृतसर में आये। आपने स्वामीजी महाराज से प्राचीन भारत के नगरों व प्रदेशों के नाम पूंछें। स्वामी जी ने उनकी सारी समस्या का समाधान कर दिया और एतद्विषयक एक लेख भी पत्रों में प्रकाशित करवाया। पं. चमूपति जी आर्यजगत् के एक अद्भुत लेखक, कवि व विचारक थे। आपकी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के प्रति असीम श्रद्धा थी। आप लाहौर में स्वामीजी महाराज से इतिहास-विषय पर घंटों चर्चा किया करते थे। आपने लिखा है कि स्वामीजी को इतिहास की खोज का चस्का है। स्वामीजी महाराज को विभिन्न प्रदेशों, वर्गों व जातियों के इतिहास व रीति-नीति का सूक्ष्म ज्ञान था।

किस मत की कौन-सी बात कैसे आरम्भ हुई, कौन-सा मत कैसे पैदा हुआ, उसने संसार का क्या व कितना हित-अहित किया, विश्व पर कितना प्रभाव छोड़ा, इन सब बातों की विस्तृत विवेचना स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी किया करते थे। श्रोता व पाठक स्वामी जी महाराज के गंभीर ज्ञान को देख, सुन व पढ़कर आश्चर्य करते थे। सिख इतिहास के भी स्वामीजी मर्मज्ञ थे। सिखमत किन परिस्थितियों में उत्पन्न हुआ, क्या कारण थे, सिखपंथ कैसे बढ़ा, इसने देश के लिए क्या किया, कहां भूल की-सिख गुरुओं का वास्तविक मन्तव्य क्या था, लोगों ने इसे कितना समझा और देश पर इसका क्या प्रभाव पड़ा, इन सब बातों का उन्हें गहरा व प्रामाणिक ज्ञान था। जाने-माने सिख विद्वान् प्रिंसिपल गंगासिंह जी की प्रार्थना पर आपने सिख मिशनरी कालेज में सिख इतिहास पर एक सप्ताह तक व्याख्यान दिये। व्याख्यानमाला की समाप्ति पर जब प्रिंसिपल गगासिंह जी ने प्रश्न पूछने को कहा तो सबने यह कहा कि हमें कोई शंका नहीं है। हमें स्वामीजी ने तृप्त कर दिया है। प्राचार्य जोधासिंह जी तो दयानन्द मठ, दीनानगर में आकर आपसे बहुत विषयों पर चर्चा किया करते थे।

इतिहास की घटनाओं के कारणों व परिणामों को स्वामीजी महाराज बहुत अच्छे ढंग से समझाया करते थे। एक बार उदार विचार के एक मौलाना ने जो आर्य विद्वानों के सम्पर्क में थे, स्वामी जी के सामने कुछ शंकाएं रखीं। आपने मौलवी जी के सब प्रश्नों के उत्तर दिये। आपके विचार सुनकर उस मौलाना ने कहा इस्लाम-विषयक आपके गहरे ज्ञान से मैं बहुत प्रभावित हूं। मैंने ऐसी युक्तियुक्त प्रमाणिक बातें कभी नहीं सुनी। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के इतिहास विषयक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित इतिहास विषयक लेखों का एक संलकन ‘इतिहास दर्पण’ नाम से सन् १९९७ में प्रकाशित हुआ जिसका सम्पादन प्रसिद्ध विद्वान, लेखक, विचारक और इतिहासकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु ने किया है। स्वामी सर्वानन्द जी ने इस पुस्तक और प्रो. जिज्ञासु जी के परिचय में लिखा है कि आपने इस ‘इतिहासदर्पण’ ग्रन्थ के लिए बहुत परिश्रम किया है।

शत्-शत् नमन!

अमर हुतात्मा महाशय राजपाल

बलिदान दिवस
6 अप्रैल, शत्-शत् नमन

महाशय राजपाल (जन्म : 1885, अमृतसर; मृत्यु : 6 अप्रैल, 1929) हिन्दी की महान सेवा करने वाले लाहौर के निवासी थे। उनका लाहौर में प्रकाशन संस्थान था। वह खुद भी विद्वान थे। राजपाल पक्के आर्य समाजी थे और विभिन्न मतों का अपनी पुस्तकों में तार्किक ढंग से खंडन करते थे। देश के बंटवारे के बाद राजपाल का परिवार दिल्ली चला आया था। 'रंगीला रसूल' के प्रकाशन के बाद से महाशय राजपाल जी पर तीन जानलेवा हमले हुए, जिसमें 6 अप्रैल, 1929 को महाशय राजपाल अपनी दुकान पर विश्राम कर रहे थे, तभी इल्मदीन नामक एक मतान्ध मुसलमान ने महाशय जी की छाती में छुरा घोंप दिया, जिससे महाशय जी का तत्काल प्राणांत हो गया। हत्यारे को कुछ युवकों द्वारा दौड़कर पकड़ लिया गया था। उसे लाहौर उच्च न्यायालय से फांसी की सज़ा हुई थी। 1924 में उन पर मुक़दमा शुरू हुआ था और 1929 में राजपाल जी का बलिदान हुआ। इन पांच वर्षों में उन्हें अनेक बार यह कहा गया कि आप असली लेखक का नाम बता दें। राजपाल जी ने एक ही उत्तर दिया कि 'मैं विचार-स्वातंत्र्य और प्रकाशन की स्वतंत्रता में विश्वास रखता हूं और अपनी इस मान्यता के लिए बड़े से बड़ा दंड भुगतने के लिए तैयार हूं। आर्य समाज को उन पर नाज है! आर्ष गुरुकुल नोएडा का छात्रावास उन्हीं की स्मृति है।

महात्मा हंसराज : आर्यसमाज नेता एवं शिक्षाविद

जन्म दिवस
19 अप्रैल, शत्-शत् नमन

भारत में शिक्षा के प्रसार में डीएवी विद्यालयों का बहुत बड़ा योगदान है। विद्यालयों की इस श्रृंखला के संस्थापक हंसराज जी का जन्म महान संगीतकार बैजू बावरा के जन्म से प्रसिद्ध हुए ग्राम बैजवाड़ा, जिला होशियारपुर, पंजाब में 19 अप्रैल, 1864 को हुआ था। बचपन से ही शिक्षा के प्रति इनके मन में बहुत अनुराग था पर विद्यालय न होने के कारण हजारों बच्चे अनपढ़ रह जाते थे। वह शिक्षा के प्रसार के लिए बहुत कुछ करना चाहते थे लेकिन उनके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी और जिम्मेदारी उनके ऊपर ही थी लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी उन्होंने 22 वर्ष की आयु में डीएवी स्कूल में प्रधानाचार्य के रूप में अवैतनिक सेवा आरंभ की जिसे वह 25 वर्षों तक करते रहे। महर्षि दयानंद के अनन्य भक्त थे। लाला हंसराज अविभाजित भारत के पंजाब के आर्य समाज के एक प्रमुख नेता एवं शिक्षाविद् थे। पंजाब भर में दयानंद एंग्लो वैदिक विद्यालयों की स्थापना करने के कारण उनकी कीर्ती अमर है। देश, धर्म और आर्य समाज की सेवा करते हुए, 15 नवम्बर, 1936 को महात्मा हंसराज जी ने अंतिम सांस ली। उनके द्वारा किए गए सेवा कार्य उल्लेखनीय है।

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी

जन्म दिवस
26 अप्रैल, शत्-शत् नमन

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य एवं कालान्तर में आर्यसमाज के प्रमुख नेता थे। उनकी गिनती आर्य समाज के पांच प्रमुख नेताओं में होती है। अद्भुत प्रतिभा, अपूर्व विद्वत्ता एवं गम्भीर वक्तृत्व-कला के धनी पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म 26 अप्रैल 1864 को मुल्तान के प्रसिद्ध 'वीर सरदाना' कुल में हुआ था। आपके पिता लाला रामकृष्ण फारसी के विद्वान थे। पंजाब के शिक्षा विभाग में झंग में अध्यापक थे। विशिष्ट मेधा एवं सीखने की उत्कृट लगन के कारण वे अपने साथियों में अनूठे थे। किशोरावस्था में ही उनका हिन्दी, उर्दू, अरबी एवं फारसी पर अच्छा अधिकार हो गया था तथा उसी समय उन्होंने 'द बाइबिल इन इंडिया' तथा 'ग्रीस इन इंडिया' जैसे बड़े-बड़े ग्रन्थ पढ़ लिये। कॉलेज के द्वितीय वर्ष तक उन्होंने चार्ल्स ब्रेडले, जेरेमी बेन्थम, जॉन स्टुअर्ट मिल जैसे पाश्चात्य विचारकों के शतशः ग्रन्थ पढ़ लिये। वे मार्च, 1886 में पंजाब विश्वविद्यालय की एम.ए. में सर्वप्रथम रहे। तत्कालीन महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द के कार्यों से प्रभावित होकर उन्होंने 20 जून 1880 को आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की। महात्मा हंसराज व लाला लाजपत राय उनके सहाध्यायी तथा मित्र थे। आर्य समाज को उन पर नाज है! स्वामी दयानन्द जी के अंतिम समय पर उनका ईश्वर विश्वास (ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो) से नास्तिक से आस्तिक बन गए। आर्यसमाज की सेवा समाज सेवा व अधिक कार्य करने के लिए उनका छोटी आयु में बीमारी के कारण देहांत हो गया। आर्यसमाज के नियमों को अपनी पीठ पर लिखकर घूमते थे।

सौम्य व्यक्तित्व एवं दिव्य कृतित्व के धनी महात्मा हंसराज

प्रो. ओम कुमार आर्य

आर्य समाज का सौभाग्य था कि महर्षि के निर्वाणोपरांत विभिन्न क्षेत्रों में हमारे उन दिग्गज नेताओं ने मोर्चा सम्हाला जो पूरी तरह से सुयोग्य थे, कर्मठ थे, सिद्धांत निष्ठ और समर्पित थे। उनमें कतिपय उल्लेखनीय नाम है-अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, वैदिक धर्म के लिए अपना जीवन न्यौछावर करने वाले धर्मवीर, पं. लेखराम आर्य मुसाफिर, पंजाब केसरी लाला लाजपत राय, उद्‌भट वैदिक विद्वान मुनिवर पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, सर्व त्यागी महात्मा हंसराज आदि। इस लेख के चरित नायक महात्मा हंसराज की जयंती पर उनके शुभ, शुचि दुग्ध-धवल चरित्र के कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डालना आवश्यक है। यह तो सत्य है कि महात्मा जी का जीवन गुणों और विशेषताओं का एक भव्य महाकाव्य ही नहीं विशाल महासागर है, इस लघु लेख में उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व और कृतित्व को पूरी तरह से तो प्रस्तुत नहीं किया जा सकता, हां एक संक्षिप्त सी झलक अवश्य दिखाई जा सकती है। महात्मा जी अपने सौम्य व्यक्तित्व और दिव्य कृतित्व के कारण उन महापुरुषों में शामिल है जिनके विषय में नीतिकार महाराज भर्तृहरि कहते हैं- **'नास्ति येषां यशः कार्य जरामरणजं भयम्।'**

नीति शतक श्लोक-23।

आइये, उनके शालीन, सौम्य देवोपम व्यक्तित्व और असाधारण कृतित्व के कुछ पहलुओं पर विचार करे। किसी व्यक्ति के जीवन में, या यूं कहिये कि उसके व्यक्तित्व में जिन गुणों से सौम्यता, शालीनता, गांभीर्य आदि की झलक देखने को मिलती है उनका उल्लेख **महर्षि दयानन्द ने अपनी कालजयी कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' के तीसरे समुल्लास के प्रारम्भ में किया है- 1. अध्ययन/स्वाध्यायादि में रत रहना 2. शील स्वभाव युक्त होना 3. सत्य निष्ठ होना 4. गर्व न करना/अभिमान-मल से रहित होना 5. संसार के कष्ट दूर करने में तत्पर रहना 6. परोपकार में तत्पर रहना।**

ये सारे गुण महत्मा जी में थे और उनके व्यक्तित्व में स्पष्ट झलकते थे। निरभिमानता के तो वे साकार रूप थे। शायद महात्मा विदुर का यह कथन सदैव उनके समझ होगा- 'अभिमानः श्रियं हन्ति' अर्थात अभिमान से श्री/शोभा का हनन होता है। महात्मा हंसराज पूर्णतः आस्तिक थे, ईश्वर में उनकी आस्था अटल, अविचल थी। स्वाभाविक है कि सच्चे ईश्वर भक्त को ईश्वर की कृपा तो मिलती ही है। और महाराज भर्तुहरि ने अपने 'नीतिशतकम्' के श्लोक 24 में जो नौ उत्तम गुण एक आस्तिक व्यक्ति के गिनाये है उनमें से तीन ये है- क्लेश रहित शांत मन, अजब सुकून देने वाला आकर्षक, आभायुक्त व्यक्तित्व, विद्या से निर्मलीकृत मुखमंडल जो महात्मा हंसराज जी की मुखाकृति पर सदैव अकित रहते थे। सौम्यता, शालीनता महात्मा जी के लिए दिखावे के लिए ओढ़े हुए भाव न होकर उनके स्थायी भाव थे।

हम चाहकर भी अपने व्यक्तित्व और जीवन में वे विशेषताएं उत्पन्न नहीं कर पाये जो एक सच्चे वैदिक-धर्मी के जीवन में होनी चाहिए। अंतर यह है कि हम 'कथनी' बहादुर है महात्मा जी

महात्मा हंसराज पूर्णतः आस्तिक थे, ईश्वर में उनकी आस्था अटल, अविचल थी। स्वाभाविक है कि सच्चे ईश्वर भक्त को ईश्वर की कृपा तो मिलती ही है। और महाराज भर्तुहरि ने अपने 'नीतिशतकम्' के श्लोक 24 में जो नौ उत्तम गुण एक आस्तिक व्यक्ति के गिनाये है उनमें से तीन ये है- क्लेश रहित शांत मन, अजब सुकून देने वाला आकर्षक, आभायुक्त व्यक्तित्व, विद्या से निर्मलीकृत मुखमंडल जो महात्मा हंसराज जी की मुखाकृति पर सदैव अकित रहते थे। सौम्यता, शालीनता महात्मा जी के लिए दिखावे के लिए ओढ़े हुए भाव न होकर उनके स्थायी भाव थे। हम चाहकर भी अपने व्यक्तित्व और जीवन में वे विशेषताये उत्पन्न नहीं कर पाये जो एक सच्चे वैदिक-धर्मी के जीवन में होनी चाहिए। अंतर यह है कि हम 'कथनी' बहादुर है महात्मा जी 'करणी' बहादुर थे। सिद्धांतो को, नियमो को, वेदोपदेश को साक्षात् आचरण में उतारना उनकी विशेषता थी, 'तोता रटंत' व्यर्थ का आलाप-प्रलाप करना हमारी आदत बन गई है। फलस्वरूप कही कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व इसलिए विलक्षण और असाधारण था कि व्यर्थ की चमक-दमक और एषणाओं की दलदल में न फंसकर उन्होंने सदा सरल, सहज और उच्च मानवीय मूल्यों से युक्त पारदर्शी, दुग्ध-धवल चरित्र के धनी आदर्श मानव के रूप में जीवन यापन किया।

'करणी' बहादुर थे। सिद्धांतों को, नियमों को, वेदोपदेश को साक्षात् आचरण में उतारना उनकी विशेषता थी, 'तोता रटंत' व्यर्थ का आलाप-प्रलाप करना हमारी आदत बन गई है। फलस्वरूप कहीं कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व इसलिए विलक्षण और असाधारण था कि व्यर्थ की चमक-दमक और एषणाओं की दलदल में न फंसकर उन्होंने सदा सरल, सहज और उच्च मानवीय मूल्यों से युक्त पारदर्शी, दुग्ध-धवल चरित्र के धनी आदर्श मानव के रूप में जीवन यापन किया।

बिना नागा सत्संग, संध्या, स्वाध्याय करना समय की अत्यधिक पाबंदी, अपने दायित्व का ईमानदारी से निर्वहण, उच्च नैतिकता, मूक सेवा, देशभक्ति, शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सुख सुविधाओं की नि:स्वार्थ आहुति दे देना आदि अवयवों से निर्मित बुनियाद पर महात्मा जी का सौम्य व्यक्तित्व एवं दिव्य कृतित्व टिका हुआ है। त्याग, बलिदान, समर्पण आदि उनके जीवन का मूलमंत्र ही नहीं सार कहा जा सकता है। मात्र 22 वर्ष की आयु में एक युवक जो उच्च शिक्षा प्राप्त है, सक्षम है, अपने लिए अपने परिवार के लिए बहुत कुछ करने की अपार संभावनाएं जिसके सामने है वह अपने ऋषि के लिए, आर्य समाज के लिए बेहिचक पूरी दृणता से यह घोषणा कर दे कि मैं अपने प्रिय डीएवी के लिए (पहले विद्यालय पश्चात् महाविद्यालय) 'अवैतनिक' सेवाएं देने हेतु अपने को प्रस्तुत करता हूं, सोचिये कि त्याग तपस्या, समर्पण की और कितनी ऐसी मिसाले इतिहास में मिलती है। उनकी यह घोषणा 'भीष्म-प्रतिज्ञा' से कम नहीं है। मध्य युग में वैदिक-धर्म के पुनरुद्धार के लिए कटिबद्ध होकर महान वैदिक विद्वान कुमारिल भट्ट ने विलाप करती रानी मां को आश्वस्त किया था- 'मां विषीद करारोहे, भट्टोऽस्मि भूतले' कुछ इसी प्रकार का वचन युवक हंसराज ने सन् 1886 में मां आर्य समाज को दिया था कि चिंता करने की आवश्यकता नहीं अपनी प्रिय डीएवी संस्था की नींव की प्रथम ईंट मैं बनूंगा, और कहा था- 'हंसराजोऽस्मि भूतले' मैं हूं न, तुम्हारा अवैतनिक सेवक हंसराज।

अपने मिशन के लिए साक्षात् कृति की बलिवेदी पर इतनी बड़ी आहुति शायद ही कोई और मिले। हम देश के लिए बलिदान होने वाले अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक, चन्द्रशेखर आज़ाद, राजगुरु, सुखदेव, भगत सिंह आदि बलिदानी वीरों की शहादत को नमन करते हैं, किन्तु यह कहना भी कोई अतिशयोक्ति नहीं कि महात्मा हंसराज ने भी जीवन की समस्त सुख-सुविधाओं को ठुकराकर, अपने रंगीन-कोमल सपनों का निर्ममता से गला घोंटकर एक शहीद का जीवन जीया और वे **'जिंदा शहीद थे' उनके नि:स्वार्थ सेवा-कार्य के लिए यह कहना सर्वथा उपयुक्त है कि-डी.ए.वी. के रूप में जब एक शिक्षा-**

'दीप जलाना था, अज्ञान, अविद्या, अंधकार को धरा से दूर भगाना था। जीवनदानी कौन बनेगा, सोच रहा था आर्य समाज तप की भट्ठी में कौन तपेगा, चिंतित था आर्य समाज तब हंसराज आगे आया, मैं दायिव निभाऊंगा, अवैतनिक सेवा करूंगा और ऋषि का ऋण चुकाऊंगा, इसीलिए तो दिग्दिगन्त में गूंज रही है यह आवाज, धन्य महात्मा हंसराज, तुम धन्य महात्मा हंसराज।'

उनका व्यक्तित्व और कृतित्व बहुआयामी था। 25 साल की अवैतनिक सेवा के पश्चात् महात्मा जी 1912 में एक निष्काम कर्मयोगी, विरक्त अनासक्त योगी की तरह प्राचार्य पद से पृथक् हो गये किन्तु विभिन्न क्षेत्रों में सतत् सेवा कार्य करते रहे। उनका सेवा कार्य बहुत व्यापक था, जैसे शिक्षा का प्रसार, लोक-जागृति, विविध जनहित के कार्य, भूकंप, बाढ़, अकाल पीडितों की सहायता। कुछ उदाहरण-1921-22 में केरल में मालाबार और 1932 में जम्मू-कश्मीर के पूंछ में दंगा पीडितों की सहायता। दुर्भिक्ष के दौरान सन् 1918 में गढ़वाल, 1920 में उड़ीसा, शिमला, कांगड़ा में सन् 1921 में राहत कार्य। 1908 में आंध प्रदेश में भीषण दुर्भिक्ष पड़ा, महात्मा जी के दिन रात के अथक परिश्रम के परिणाम स्वरूप लगभग 19-17 हजार अकाल पीड़ितों को बचाया गया। इसी प्रकार भूकंप, बाढ़ जैसी भयंकर प्राकृतिक आपदाओं के दौरान भी महात्मा हंसराज की अगुवाई में पीड़ितों को बचाया गया।

मैं पुन: अपने मूल विषय पर लौटता हूं कि महात्मा हंसराज जैसे युग पुरुष किसी भी संस्था की शान होते हैं, अनमोल निधि होते हैं, लंबी प्रतीक्षा के पश्चात् ऐसी विभूतियां धराधाम पर अवतरित होती हैं- **हजारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पर रोती है, बनी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।** ऐसे महापुरुषों की जयंती के अवसर पर मात्र भाषणों, इधर-उधर से जुटायी सामग्री के आधार पर लिखे लेख, सेमिनार गोष्ठी आदि से कुछ विशेष हित नहीं होगा न डीएवी का, न आर्य समाज का, न समाज और न देश का। आवश्यकता है सोच में आमूल-चूल परिवर्तन की। अब जरूरत है महात्मा जी का ईमानदारी से अनुकरण करने की अपने जीवन यह सब लिखना संभव नहीं है। ■■

देवभाषा व राष्ट्रभाषा के प्रति क्रांतिकारी वीरसावरकर के अमूल्य विचार

संस्कृतनिष्ठ हिंदी जो संस्कृत से बनायी गयी है और जिसका पोषण संस्कृत भाषा से हो, वह हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा होगी। संस्कृत भाषा संसार की समस्त प्राचीन भाषाओं में सबसे अधिक संस्कृत और सबसे अधिक सम्पन्न होने के अतिरिक्त हम हिंदुओं के लिए सबसे अधिक पवित्र भी है। हमारे धर्मग्रन्थ, इतिहास, तत्वज्ञान और संस्कृति, संस्कृत भाषा से इतनी अधिक परस्पर मिली हुई है और इसके अंतर्भूत है कि यही हमारी हिंदू जाति का वास्तविक मस्तिष्क है।

हमारी अधिकांश मातृ-भाषाओं की यह माता है, इसने उन्हें अपने वक्ष का दूध पिलाया है। आज हिंदुओं की समस्त भाषाएं जो या तो संस्कृत से ही निकली हैं या उसमें दूसरी भाषा मिला कर बनायी गयी हैं, वे सब तभी उन्नत और संवृद्ध हो सकती हैं जब वे संस्कृत-भाषा से पोषित की जायें। इसलिये प्रत्येक हिंदू युवक के प्राचीन भाषा के पाठ्यक्रम में संस्कृत भाषा आवश्यक रूप से रहनी चाहिये। संस्कृत हमारी देवभाषा है और हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा।

हिंदी को राष्ट्रीय भाषा स्वीकार करने में अन्य प्रांतों की भाषा के संबंध में कोई अपमान की भावना या ईर्षालु भावना नहीं है। हमें अपनी प्रांतीय भाषाओं से भी उतना ही अधिक प्रेम है जितना कि हिंदी से। ये सब भाषाएं अपने अपने क्षेत्र में उन्नत होती रहेंगी। वास्तव में कुछ प्रांतीय भाषाएं हिंदी भाषा की अपेक्षा साहित्य में अधिक उन्नत और अधिक सम्पन्न हैं परंतु फिर भी हिंदी अखिल हिंदुत्व की राष्ट्रभाषा होने के लिये सब प्रकार से सर्वश्रेष्ठ है। यह बात भी ध्यान में रखने की है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा-व्यवस्था के लिये नहीं बनाया गया है। वास्तविक बात यह है कि मुसलमान और अंग्रेजों के आने के बहुत पहले से ही हिंदी ने समस्त हिंदुस्थान में राष्ट्रीय भाषा का स्थान ग्रहण कर लिया था।

हिंदू तीर्थ यात्री, व्यापारी और यात्रा करने वाले देश के एक छोर से दूसरे छोर तक घूमते थे- बंगाल से सिंधु तक और काश्मीर से लेकर रामेश्वर तक वे जाया करते थे और वे अपना मनोगत भाव प्रत्येक स्थान में हिंदी में ही व्यक्त कर अपना काम चलाते थे। जिस भांति संसार के बुद्धिमान हिंदुओं की भाषा संस्कृत थी, उसी भांति कम से कम एक हजार वर्षों से साधारण हिंदुओं की राष्ट्रीय भाषा हिंदी रही है। इसके अतिरिक्त आज भी हम यह देखते हैं कि भारत में जितने लोग हिंदी समझ सकते हैं या जितने लोग हिंदी को मातृभाषा के रूप में बोलते हैं, उतनी अन्य किसी भाषा को न तो समझते हैं और न बोलते हैं। प्रत्येक हिंदू विद्यार्थी के लिए यह आवश्यक कर दिया जाये कि सेकेंडरी स्कूलों में प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी प्रांतीय भाषा की शिक्षा के साथ साथ हिंदी भी आवश्यक रूप से पढ़ाई जाये।

हिंदी से हमारा अभिप्राय शुद्ध 'संस्कृतनिष्ठ' हिंदी से है, उदाहरण के लिये महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जैसी हिंदी अपने सत्यार्थप्रकाश में लिखी है। सत्यार्थ-प्रकाश की हिंदी कितने सरल है, उसमें अनावश्यक रूप से एक भी विदेशी भाषा का शब्द नहीं डाला गया और साथ ही उस में अपनी भावना को कितने सुन्दर रूप से स्पष्ट किया गया है। यहां यह बता देना ठीक होगा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ऐसे पहले हिंदू नेता हुए हैं जिन्होंने पहले-पहल यह बात कही थी कि अखिल हिंदुत्व की राष्ट्र-भाषा हिंदी होनी चाहिये।

हमारी इस संस्कृतनिष्ठ हिंदी का संबंध उस हिंदूस्थानी से कुछ भी नहीं है जो वर्धा की योजना के अनुसार जबरदस्ती दूसरी भाषा के शब्द ठूंस कर बनायी गयी है। यह नीति भाषा को दलदल में फंसाने से कुछ भी कम नहीं और हमें इस आंदोलन को दृढ़तापूर्वक दबा देनी चाहिये। इतना ही नहीं, हमारा यह भी अनिवार्य कर्तव्य है कि हम अपनी प्रांतीय भाषाओं में से और बोलचाल की भाषा में से भी वे सब विदेशी शब्द बीन डालें जो उनमें अंग्रेजी अथवा अरबी के हैं।

हम अंग्रेजी भाषा के विरोधी नहीं हैं, इसके विपरीत हमारा आग्रह है कि अंग्रेजी भाषा नितांत आवश्यक है और विश्व-साहित्य में प्रवेश करने के लिए यह एक पासपोर्ट या साधन है। परंतु हम अपनी देशी भाषाओं में विदेशी भाषाओं के बढ़ते हुए प्रवाह को बिना आवश्यकता और बिना रोकटोक के नहीं होने देंगे। इस के लिए हमें अपने बंगाली बंधुओं को विशेष रूप से बधाई देना चाहिये कि उन्होंने अपनी भाषा को अनावश्यक विदेशी शब्दों से बिलकुल स्वच्छ रखा है। हमारी अन्य प्रांत की भाषाओं के संबंध में यह बात नहीं कही जा सकती।

प्रस्तुति : प्रियांशु सेठ

महात्मा हंसराज : एक आदर्श आचार्य

प्रो. शशि प्रभा कुमार

भारतवर्ष की पुण्य भूमि पर जन्म लेने वाली महान विभूतियों में से अन्यतम हैं महात्मा हंसराज, जिनका जन्म 19 अप्रैल, 1864 को पंजाब प्रांत के छोटे से गांव बजवाड़ा- होशियारपुर में हुआ था। डीएवी शिक्षण संस्थाओं के प्रवर्त्तक महात्मा जी के 157वें जन्मदिवस पर उनकी स्मृति में समर्पित है यह भावांजलि! 'महात्मा सर्वभूतात्मा' इस लक्षण के आधार पर कहा जा सकता है कि जिस व्यक्ति का हृदय 'स्व' से ऊपर उठकर 'सर्व' के साथ अभिन्न हो जाता है- उसी का महात्मा कहलाना सार्थक है।

विचित्र संयोग की बात है कि हमारे देश में जिन दो महापुरुषों को 'महात्मा कहा गया, उनमें से महात्मा गांधी की जन्मशती हाल ही में मनाई गई। महात्मा हंसराज और महात्मा गांधी इन दोनों विभूतियों के व्यक्तित्व में कुछ विलक्षण समानताएं पाई जाती है, जैसे- दोनों का जन्म साधारण व्यापारी परिवारों में हुआ किंतु दोनों ने उच्चशिक्षा प्राप्त की, दोनों के प्रारंभिक जीवन में कुछ ऐसी अप्रिय धटनाएं हुई जिन्होंने उन्हें उद्वेलित किया और उनके जीवन की दशा बदल दी- महात्मा गांधी का दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन से धकेला जाना और महात्मा हंसराज को ईसाई मिशनरी विद्यालय के प्रधानाचार्य द्वारा वैदिक धर्म के प्रति आस्थापूर्ण आग्रह के लिए दंडित किया जाना। इन दोनों महापुरुषों का शारीरिक गठन सामान्य किन्तु नैतिक और आत्मिक बल असामान्य था, दोनों ने गृहस्थ में रहकर भी संन्यासियों जैसी सादगी भरी तपस्या की। एक ने अपने दृढ़ सङ्कल्प एवं सतत अध्यवसाय के बल पर देशवासियों को विदेशी दासता से मुक्त कराया तो दूसरे ने अपने त्याग एवं समर्पण द्वारा देश की भावी पीढ़ियों को अज्ञान के बंधन से मुक्त कराया और वैदिक ज्ञान का प्रशस्त पथ दिखाया।

महात्मा हंसराज की आरंभिक शिक्षा। एक ईसाई मिशनरी विद्यालय में हुई। किन्तु पहली बार महर्षि दयानन्द का प्रेरक व्याख्यान सुनते ही उनके विचारों में ऐसा क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ कि वे वैदिक ज्ञान के सशक्त प्रहरी बन गये। महात्मा हंसराज के व्यक्तित्व पर दयानन्द के इस पारस प्रभाव का और गहरा रग चढ़ाया- लाला लाजपत राय, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी और लाला सांईदास की संगति ने। इन लोगों के साथ मिलकर उन्होंने लाहौर में पहला डीएवी विद्यालय खोला और स्वं सर्वथा सुयोग्य होते हुए भी किसी सरकारी नौकारी की तलाश न करके युवक हंसराज ने अपना जीवन इसी उद्देश्य की सफलता हेतु समर्पित कर दिया।

यह महात्मा हंसराज की आजीवन साधना का ही सुफल है कि आज डीएवी नाम से देश-विदेश में लगभग 800 शिक्षण संस्थाएं चल रही है, जिनमें लाखों बालक-बालिकाएं और युवक-युवतियां आदर्श शिक्षा ग्रहण कर रहे है। जैसा कि 'दयानन्द एंग्लो वैदिक' डीएवी नाम से ही स्पष्ट है- इसकी पृष्ठभूमि महात्मा हंसराज के तपस्वी व्यक्तित्व से प्रेरित है। महात्मा जी को अंग्रेजों के शासनकाल में अंग्रेजी में चलाई जाने वाली पत्रिका Regenerator of Aryayarta का प्रथम संपादक होने का गौरव उनके उत्कृष्ट अंग्रेजी ज्ञान के कारण मिला, किंतु वैदिक धर्म के प्रति उनकी अटूट आस्था उनके संस्कृत-ज्ञान के द्वारा ही सम्पुष्ट हुई, इसमें सन्देह नहीं।

आधुनिक युग में जब शिक्षा केवल सूचनाओं के संग्रह पर केंद्रित है और संस्कारों की सर्वथा उपेक्षा हो रही है, तब उक्त समन्वयवादी आदर्श की अपेक्षा नितांत अनुभव की जा रही है। कहना न होगा कि महात्मा हंसराज ने न केवल इस आदर्श को मूर्त्तरूप प्रदान किया, अपितु अपने सर्वस्व-समर्पण के द्वारा उसे आजीवन सशक्त भी बनाया। हमारे प्राचीन शास्त्रों में आदर्श (स्वयमाचरति यस्मादाचारं स्थापयत्यपि। आचिनोति च शस्त्राणि आचार्यस्तेन उच्चते।। बह्मपुराण, पूर्वभाग- 32/33) का जो प्रतिमान दिया गया है, उसके अनुसार **शिक्षक केवल विषय का ज्ञान नहीं कराता अपितु अपने आचरण के द्वारा शिष्यों को आचार्य की शिक्षा देता है, उनके बुद्धि को तीक्ष्ण बनाता है तथा विषयों का ग्रहण भी कराता है- आचार्यः कस्मात्? आचार ग्राहयति, आचिनोति बुद्धिमाचिनोति अर्थान्।** महात्मा हंसराज ने 22 वर्ष की आयु में यह संकल्प लिया था कि वे महर्षि दयानन्द की स्मृति में प्रारम्भ किये जाने वाले डीएवी विद्यालय के अवैतनिक प्रधानाचार्य के रूप में आजीवन कार्य करेंगे। निस्संदेह उन्होंने ऋषि-ऋण से उऋण होने का स्तुत्य संकल्प विकटतम परिस्थितियों में भी जितनी निष्ठा एवं सादगी से निभाया, वह अकल्पनीय है। **शत्-शत् नमन!!**

Women in Vedic Philosophy

Article by- Dr. Vivek Arya

Vedas and related texts sings about the status of womanhood in a very glorifying and respectful way. It will be no exaggeration to say that among all religious philosophies in the world only Vedas considers women as superior to man. If we compare the status of women in Christianity and Islam they do not consider women to be even equal to man. Most of the readers might have doubt arising in their mind that than why the condition of women was so downtrodden and trampled especially in the middle ages.

The answer to this question is that in Vedic age the women enjoyed respectful status in whole society while in the middle age of ignorance was the era of downfall and decline. Most of the objections about status of women are related to same middle age like Sati Pratha, Dowry, Polygamy, Adultery, lack of education, child marriage, widowhood etc. These ill practices prevailed when people stopped following the instructions of the Vedas. They were side effects of in-compliance and non adherence of Vedic Philosophy. So, the fault goes to inaction not to the Vedic Texts.

Status of Women in Vedas : Vedas regards womanhood to such status that many women became Vedic Seers or Rishikas in the Vedic age. The various suktas of Rigveda like 10 /134, 10/40, 8/91, 10/95,10/107, 10/109, 10/154, 10/159,5/28 were elaborated by female Vedic Seers like Ghosha, Godha, Upanishada, Apala, Vishavavara, Nishat,Romsha etc.

1.Vedas clearly mentions that Women can Read/Listen/Chant/Teach any Vedic Mantra. Rigveda 10/191/3. God says that O! man and women i am granting you these Mantras for you both So, that you can think and progress together. Atharvaveda 14/1/64

O Bride! Let the Vedic knowledge (Vedas) be in front of you, behind you and all along side you. Let you attain knowledge of Vedas and live life according to them. Yajurveda 14/2. O! Women for success in life you must read and follow Vedas. Rigveda 1/1/5. Women who read Vedas and related Texts in her life practicing celibacy are adorned in society. Yajurveda 14/14. If both Boys and Girls are taught Vedas from beginning of life they attains knowledge and wisdom promptly.

2.Vedas grants full opportunity to women to become scholar and attain Knowledge. Atharvaveda 11.5.18. Girls should train themselves to become complete scholars and youthful through Brahmcharya and then enter married life. Rigveda 6.44.18. The government should ensure that all boys and girls get good education, follow Brahmacharya and strengthen the society.

3. Vedas considers women as source of Knowledge and guidance for whole family. Atharvaveda 14.1.20. Oh wife! Give us discourse of knowledge Atharvaveda 7.46.3. Teach the husband ways of earning wealth Atharvaveda 14.1.20. Oh wife! Give us discourse of knowledge

4. Vedas speaks of Women as supporter, protector and pillar of whole family. Atharvaveda 2:36:5. Oh bride! Step into the boat of prosperity and take your husband beyond the ocean of worldly troubles into realms of success- Atharvaveda 1.14.3.

प्रणामाञ्जलि

ओ सद्गृहस्थ, ओ वानप्रस्थ, ओ तपः पूत ओ पूर्णकाम्।
यतिवर तुझको शत् शत् प्रणाम।

जीवन तेरा क्या सरल सरल, मानस तेरा क्या विमल विमल।
निश्चय में अडिग हिमालय सम्, शीतल पावन ज्यों गंगा जल।

ओ श्वेत वस्त्रधारी साधु, तेरा पथ क्या सुन्दर ललाम।
तेरे प्रयत्न सब सफल हुए, चहु दिश विद्या के स्रोत बहे।

तेरे आवाहन पर कितने वीरों ने जीवन दान दिये।
तू शांत महासागर समान, तूफानों का भी केंद्र धाम।

तू सत्य अहिन्सा में विलीन, सर्वथा पापमय से विहीन।
ऋषि भक्ति का सागर महान् तू उस सागर का मुक्त मीन।

तेरा चरित्र महिमा मंडित प्रेरणा स्रोत हृदयाभिराम्।
यतिवर तुझको शत् शत् प्रणाम।।

➲ **स्व. श्री उत्तम चन्द्र शरण**

राम ! तुम्हारा शत् अभिनंदन

राष्ट्र पुरुष थे, विश्व विजेता मर्यादापुरुषोत्तम।
महा अनुज थे, सत्यं शिवं सुन्दरम् से भी सुन्दरतम्।
रविकुल के रवि बनकर तुमने नष्ट किया था भूतल तम।
युगस्रष्टा! हे युगद्रष्टा! तुम उत्तम से भी उत्तम।
राम! तुम्हारा शत अभिनंदन।।
भू-मण्डल की असुर वृत्तियों का तुमने संहार किया।
देश धर्म की मर्यादा रख, जगती का उपकार किया।
अन्यायी रावण का वध कर, धरती का उद्धार किया।
मानवता की गरिमा से भारत भू का श्रृंगार किया।
विप्र-धेनु-सुर-संतों में भर दिया अभयता का स्पन्दन।
राम! तुम्हारा शत अभिनंदन।।
न्याय धर्म का दया प्रेम का, तुमने संतान-वितान किया।
यम नियमों की गरिमा को, तुमने सदैव सम्मान दिया।
जगती के जन जन को तुमने, पुरुषोचित अभिमान दिया।
कर सर्वस्व निछावर अपना, काम सभी निष्काम किया।
नष्ट किया तुमने निर्भय हो, इस धरती का दारुण-क्रन्दन।
राम! तुम्हारा शत अभिनंदन।।

➲ **राधेश्याम आर्य**

ऋषि राज

भारत का बेड़ा पार किया ऋषिराज तुम्हारा क्या कहना।
ऋषिराज तुम्हारा क्या कहना गुरुदेव तुम्हारा क्या कहना।।
भारत का बेड़ा पार किया....।
शिवरात्रि की घटना देखी, सच्चे शिव की अभिलाष हुयी।
घर बार छोड़ कर चल दिये, तेरी तलाश का क्या कहना।।
भारत का बेड़ा पार किया....।
जंगल पर्वत सब घूम लिए, अक्कड़-फक्कड़ भी खूब मिले।
मठ मंदिर में जाकर देखा, विश्वास न आया क्या कहना।।
भारत का बेड़ा पार किया....।
सच्चे सद्गुरु की तलाश करी गुरु विरजानंद से आन मिले।
तीन ही वर्ष में शिक्षा ली, तेरी बुद्धि का क्या कहना।।
भारत का बेड़ा पार किया....।
गुरु बोले लौंग नहीं चाहिए, अपना जीवन दे दो बेटा।
सर्वस्व देश हित लगा दिया, तेरी गुरु भक्ति का क्या कहना।।
भारत का बेड़ा पार किया....।
भारत मां की बेड़ी देखी शूद्रों की थी दुर्दशा बहुत।
नारी विधवा पर जुल्म देख, सम्मान दिलाया क्या कहना।।
भारत का बेड़ा पार किया....।
ना डरे कभी ना झुके कभी, आगे ही बढ़ते रहे सदा।
सत्यार्थ दिया पढ़ने के लिए, तेरी युक्ति का क्या कहना।।
भारत का बेड़ा पार किया....।
तुमने अमृत बांटा सबको, दुनिया ने सितम तुम पर ढ़ाये।
'बीनायति' दुर्भाग्य का वह दिन, पाचक के विष का क्या कहना।।
भभारत का बेड़ा पार किया....।
तेरी इच्छा हो पूर्ण प्रभु, अभी काम अधूरे बहुत रहे।
श्रद्धानंद, लेखराम, गुरुदत्त इन दीवानों का क्या कहना।।
भारत का बेड़ा पार किया....।।

➲➲

आप इस पृथ्वी पर अतिथि बनकर आए हैं, स्वामी नहीं

संसार में अधिकांश लोग स्वयं को यहां की संपत्तियों का मालिक समझते हैं। उनके विचार इस प्रकार के होते हैं, यह मकान मेरा है। मैं इसका मालिक हूं। यह कार मेरी है। यह बैंक बैलेंस मेरा है। यह परिवार मेरा है। यह बेटा मेरा है। यह सम्मान मेरा है। यह विद्या मेरी है, मैं इन सब वस्तुओं का मालिक हूं इत्यादि।

इस मैं और मेरी के चक्कर में बेचारे जीवन भर दुखी रहते हैं। इन वस्तुओं की प्राप्ति और सुरक्षा में सारा जीवन तनाव में जीते हैं। मैं यह नहीं कहना चाहता कि इन वस्तुओं का उपयोग और सुरक्षा न करें। मैं यह कहना चाहता हूं कि इन वस्तुओं का उपयोग और सुरक्षा इस प्रकार से करें, जैसे किसी धर्मशाला में कोई अतिथि वहां की वस्तुओं का प्रयोग और सुरक्षा करता है। वह धर्मशाला की वस्तुओं का मालिक स्वयं को नहीं मानता, केवल उपयोगकर्ता के रूप में ही स्वयं को स्वीकार करता है।

परंतु स्वयं को इन वस्तुओं का मालिक मानने वाले लोग, वास्तव में भ्रांतियों में जी रहे हैं। शायद आप भी ऐसा ही सोचते होंगे। जिन-जिन वस्तुओं को आप, मेरा है, या मेरी है, ऐसा मानते हैं, वास्तव में उन सब वस्तुओं में से आपकी वस्तु तो शायद ही कोई हो। मेरे विचार से वस्तु तो आपकी कोई भी नहीं होगी । उन वस्तुओं को प्राप्त करने का थोड़ा सा पुरुषार्थ बस आपका है, इससे अधिक कुछ नहीं। क्योंकि जब आप इस संसार में आए थे, इस पृथ्वी पर आप ने जन्म लिया था, तब आप अपने साथ कुछ भी नहीं लाए थे। और जब इस संसार से जाएंगे, तब भी आप कुछ भी अपने साथ नहीं ले जाएंगे। सब जमीन, मकान, बंगला कार, संपत्ति, रुपया-पैसा, बेटा-पत्नी, परिवार सब यहीं छोड़कर जाएंगे। तो फिर क्यों भ्रांति में जी रहे हैं, कि यह मेरा है, यह मेरी है।

सत्य तो यह है कि, आपने पूर्व जन्मों में कुछ पुरुषार्थ किया, जिसके कारण आपको इस जन्म में पैदा होते ही ईश्वर ने कुछ चीजें दे दीं। माता-पिता परिवार खाने पीने की सुविधाएं इत्यादि। फिर चार-पांच वर्ष की आयु में अपने स्कूल में पढ़ाई शुरू की और कुछ पढ़-लिखकर विद्या प्राप्त की। इनकी प्राप्ति में सिर्फ थोड़ा सा पुरुषार्थ ही आपका है। बाकी संपत्तियां आपने सब यहीं से ली हैं और जब संसार छोड़कर जाएंगे, तब भी यहीं छोड़कर ही जाएंगे। इसलिए आपका कुछ नहीं है।

जैसे आप कभी-कभी किसी धर्मशाला में होटल में या किसी मित्र रिश्तेदार के घर पर जाते हैं और अतिथि बनकर रहते हैं। दो-चार दिन रहते हैं, फिर वापस अपने घर आ जाते हैं, वहां सदा नहीं रहते। इसी प्रकार से आपने इस पृथ्वी पर जन्म लिया है। यहां पर कुछ लंबा समय रहेंगे। 70, 80 या 90 वर्ष। सदा तो यहां भी नहीं रहेंगे। उसी प्रकार से अतिथि बनकर फिर यहां से प्रस्थान करेंगे। इसलिए सत्य यही है कि आप यहां वस्तुओं के मालिक नहीं हैं। ■■

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी

स्वामी दयानन्द सरस्वती ऐसे पहले महामानव थे, जिन्होंने वेदों को सत्य विद्याओं की पुस्तक कहा ही नहीं सिद्ध भी किया। ईश्वर और उसका दिव्य ज्ञान वेद। ज्ञान-विज्ञान का मूल स्रोत सर्वज्ञ ईश्वर का दिया हुआ वेद ज्ञान था। इन दोनों के आश्रय के बिना कोई भी मनुष्य इतने महान कार्य नहीं कर सकता। जो पाश्चात्य विद्वान वेदों को गड़रियों के गीत कहा करते थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इतने व्यापक क्षेत्रों में कार्य किया है कि जब हम किसी क्षेत्र विशेषज्ञ का मूल्यांकन करते हैं, तो अन्य कई क्षेत्र हमारी आंखों से ओझल ही रह जाते हैं। राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए उनके महान योगदान पर अभी हमारी दृष्टि नहीं पड़ी है। संसार उनको एक धार्मिक महापुरुष के रूप में ही जानता है। सच में स्वामी जी एक स्वतंत्र विचारक थे, किसी परंपरा और पूर्वाग्रह से बंधे रहना उन्हें स्वीकार न था। वेदों के प्रति उनकी निष्ठा और भक्ति इसी कारण थी, कि वेद मानव की स्वतंत्र-चिंतन शक्ति के द्वारों को खोलकर उसे एक अनंत आकाश प्रदान करते हैं। वेद से स्वतंत्र चिंतन शक्ति पाने वाले उदारचेता स्वामी दयानन्द सरस्वती अपनी मातृभूमि को पराधीनता में जकड़ा देखकर चुप रहें, ये संभव न था। 1857 की क्रांति को दबाकर अंग्रेज सरकार ने भारतीय जन मानस के धार्मिक घावों पर मरहम लगाने के लिए एक घोषणा की थी। ○○

क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा के पत्र की बानगी

यह कौन जानता था कि 4 अक्टूबर 1857 को कच्छ रियासत के मांडवी ग्राम के भंसाली परिवार में जन्मे श्यामजी कृष्ण वर्मा, 1857 के संग्राम के बाद के पहले ऐसे क्रांतिकारी बनेंगे जो बाद की पीढ़ी के लिए प्रेरणा के स्त्रोत तो होंगे ही, साथ ही साथ विदेशों में रहकर वहां अपने संस्कृत पांडित्य के ज्ञान को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से प्रस्फुटित कर वहां की जनता में अपना प्रभाव बढ़ाते हुए भारत में कार्यरत क्रांतिकारियों के लिए उच्च कोटि के आदर्श सिद्ध होंगे। 1875 की 10 अप्रैल को उनकी भेंट समाज सुधारक व वेदों आदि के ज्ञाता स्वामी दयानन्द सरस्वती से हुई। जिनसे मिलकर वे बहुत प्रभावित हुये व उनसे काफी प्रेरणा मिली।

श्यामजी ने अपने द्वारा विचारों व कार्यकलापों को यूरोप व विशेषकर भारत के अधिक से अधिक क्रांतिकारियों तक पहुंचाने के लिए उन्होंने जनवरी 1905 में 'इंडियन सोशियोलॉजिस्ट' नामक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। जिसकी प्रतियां किसी भी प्रकार भारत भी भेजी जाती थी तथा उन्हें बड़े ही चाव से पढ़ाया जाता था। इस पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर लिखा रहता था कि यह 'स्वतंत्र और राजनैतिक सामाजिक व धार्मिक सुधार का मुख पत्र है।' इस पत्र की व्यापक रूप से धूम मची तथा प्रशंसा हुई। इस पत्र में किस प्रकार की सामग्री प्रकाशित की जाती थी इसकी कुछ बानगी यहां प्रस्तुत है-

1. डा. अविनाश भट्टाचार्य लिखते हैं कि हम लोग 1905 में क्रांतिकारी बने तो इंडियन सोशियोलॉजिस्ट की प्रतियां पढ़ने लगे इन निबंधों में स्पष्ट रूप से निरंकुश शासन के विरुद्ध लिखा था और मार्गदर्शन दिया गया था कि इससे निपटने का एक मात्र उपाय है- पैसिव रजिस्टैंस यानी निष्क्रिय प्रतिरोध। 1905 की दिसम्बर वाली प्रति में समानान्तर सरकार की स्थापना के पक्ष में भी तर्क दिया गया था।

2. 1899 के लगभग दक्षिण अफ्रीका में ट्रान्सवेल लोकतंत्र के जोहन्सवर्ग के पास एक सोने की खान का पता लगा। तब ब्रिटेन के व्यापारियों ने इसे हड़पने के प्रयास में सहायता के लिए ब्रिटिश सरकार को भी उकसाया। इनके कुटिल प्रयासों को निष्फल करते हुए ट्रान्सवेल के शासक सेनापति कुनर ने अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई की घोषणा कर दी तथा उनकी जीत होने लगी। तभी नाटाल में रहकर गांधी जी बैरिस्टरी कर रहे थे। एक स्वयंसेवी सेना का गठन किया व अंग्रेजों का युद्ध में साथ दिया। श्यामजी ने अपने पत्र में लिखा कि जिस जाति ने अन्यायपूर्वक भारत पर अधिकार कर रखा है और निर्लज्ज शोषण से भारत को गरीब बना दिया है, ऐसे राष्ट्र की सहायता कर गांधी जी ने जो काम शुरू किया है वह बिल्कुल नाजायज, औचित्यहीन व न्याई विरुद्ध है। इस प्रकार वे उग्र विचारों की ओर जाने लगे।

3. उन्हीं दिनों कांग्रेस में 1905 वाले अधिवेशन की अध्यक्षता कौन करे, इस पर वाद-विवाद चल रहा था। प्रश्न था 'गोखले तथा बालगंगाधर तिलक' के बीच। अपने पत्र में गोखले व तिलक की तुलना करते हुए श्याम जी ने लिखा कि एक ओर तो गोखले ने 1897 में ताउन के बहाने भारतीयों पर अत्याचार के बारे में लिखा पर बाद में माफी मांगकर अंग्रेजों के कृपापात्र बन गए, पर तिलक माफी न मांगने के कारण जेल चले गए। गोखले पर कालांतर में सरकारी कृपा होती रही पर तिलक अपने उग्र विचारों के कारण या तो आर्थिक कष्ट उठाते रहे या जेल जाते रहे। अंत में गोखले को अध्यक्ष के लिए चुने जाने पर श्यामजी ने लिखा कि 'देखिए किस प्रकार एक पेशेवर राजनीतिज्ञ तरक्की करता है तथा सच्चा देशभक्त मुसीबत में फंसता है।'

4. प्रसिद्ध क्रांतिकारी खुदीराम बोस व प्रफुल्लचाकी ने बिहार के मुजफ्फरपुर में एक कुख्यात न्यायाधीश किंग्स फोर्ड को मारने की चेष्टा की पर धोखे से दूसरे गोरे मारे गये। खुदीरामबोस को 17 वर्ष की उम्र में ही फांसी हो गयी तथा उसे व उन्हीं जैसे कार्य करने वाले क्रांतिकारियों को 'आतंकवादी' कहा जाने लगा। श्यामजी इससे बहुत उत्तेजित हुये, वे आतंकवाद को भारतीय परिस्थितियों में न्याय संगत ठहराने के संबंध में कई लेख प्रकाशित किये। लीरायस्कर नामक एक प्रसिद्ध अमेरिकी पत्रकार ने 'आतंकवाद की मनोवृत्ति के बारे में एक निबंध प्रकाशित किया', उसी को श्यामजी ने अपने पत्र में प्रकाशित किया। उसमें एक रूसी आतंकवादी का हवाला था। वह युवक रसायन शास्त्र विशारद था।

बयान में यह कहा था कि मैं क्यों आतंकवादी हूं, क्यों आतंकवाद को उचित मानता हूं, यह आपके लिए समझ पाना कठिन है। आपके देश में आतंकवाद के लिए कोई उचित कारण नहीं है पर हमारे देश जारशाही रूस में यही एक मात्र सही तरीका है। ■■

समाचार - सूचनाएं

- 6 अप्रैल महाशय राजपाल बलिदान दिवस।
- 13 अप्रैल नव संवत्सर आर्य समाज स्थापना दिवस।
- 19 अप्रैल महात्मा हंसराज जयंती।
- 21 अप्रैल रामनवमी
- 26 अप्रैल गुरुदत्त विद्यार्थी जयंती।
- टंकारा ऋषि भूमि (ऋषि जन्मस्थान) गुजरात में मुख्यवक्ता आचार्य जयेन्द्र जी द्वारा ऋषि के प्रति भावपूर्ण उद्‌गार प्रगट किए गए। कार्यक्रम में पं. दिनेश पथिक एवं पथिक परिवार के बच्चों ने भजनों के माध्यम से ऋषि को स्मरण किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सिक्किम के राज्यपाल महामहिम श्री गंगा प्रसाद जी रहे।
- महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव के अवसर पर गाजीपुर गोसंवर्धन केंद्र पर भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा ऋषि बोधोत्सव (शिवरात्रि) के अवसर पर रघुमल कन्या आर्ष स्कूल, कनाट प्लेस दिल्ली में भव्य यज्ञ, भजन व प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। स्वामी विवेकानंद जी द्वारा मोक्ष प्राप्ति हेतु जीवन कैसे जिया जाए पर सारगर्भित विचार दिए गए।
- पानीपत में पं. लेखराम के स्मृति दिवस के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें रक्त साक्षी पं लेखराम को भावपूर्ण स्मरण किया गया, उनके द्वारा महर्षि दयानन्द की जीवनी लिखते समय किसी मधांध द्वारा छुरा घोंपा गया जिससे उनका प्राणांत हो गया।
- चिंतक, विचारक श्री राजेन्द्र जिज्ञासु, 250 पुस्तकों के लेखक द्वारा लिखी पुस्तक 'तड़पवाले तड़पाती जिनकी कहानी' के तीसरे अंक का विमोचन किया गया। जिसका प्रकाशन श्री गोविंद राय हासानन्द, नई दिल्ली के श्री अजय आर्य द्वारा किया गया।
- आर्य समाज 'बेटी बचाओ' अभियान एवं युवा निर्माण के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, रोहतक में चर्तुवेद पारायण महायज्ञ भव्यता से सम्पन्न हुअ।
- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में हरिद्वार कुम्भ मेले के अवसर पर वेद प्रचार का भव्य अयोजन किया जा रहा है।

विनम्र श्रद्धांजलि

निर्भीक सन्यासी स्वामी धर्मानंद जी संस्थापक, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, आबू का पिछले दिनों निधन हो गया। स्वामी जी ने आर्य समाज का बहुत कार्य किया और अनेकों लोगों को आर्य समाज की विचारधारा से जोड़कर महर्षि स्वामी दयानन्द जी के सपनों को साकार करने में बहुत बड़ा योगदान दिया। उनके निधन पर आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि!!

प्रसिद्ध भजनोपदेशक महाशय श्रीपाल आर्य जी का 86 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्होंने हिन्दी रक्षा एवं गौरक्षा आंदोलन तथा किसान आंदोलन में भी भाग लिया था व कई बार जेल भी गए। उनका मुख्य उद्देश्य आर्य समाज एवं वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार रहा।

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा

आर्य समाज नोएडा का प्रकल्प

प्रवेश-सूचना

गुरुकुल में नवीन सत्र 2021-22 के लिए मई 2021 में प्रवेश आरम्भ हो रहे हैं। प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी की आयु 10 वर्ष (5वीं पास) होना चाहिए। पाठ्यक्रम गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार एवं उ.प्र.मा.सं.शि. परिषद, लखनऊ से सम्बन्धित होगा। आवासीय गुरुकुलीय दिनचर्या, शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए आसन, प्राणायाम, व्यायाम, खेलकूद तथा शुद्ध शाकाहारी भोजन, गाय के दूध की व्यवस्था।

प्रवेश शुल्क : 5100/- रु., भोजन शुल्क : 1500/- रु. प्रतिमाह, शिक्षा नि:शुल्क

विद्यालय की नियमावली एवं प्रवेश पत्र प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें-
सम्पर्क सूत्र : 0120-2505731, 9899349304, 9871798221

लिखित परीक्षा : 30 मई 2021, प्रातः - 10 बजे

पिछली पास कक्षा का व आयु का प्रमाण पत्र,
2 फोटो एवं स्वास्थ्य प्रमाणपत्र साथ लाएं

सिफारिश को अयोग्यता माना जायेगा

साक्षात्कार लिखित परीक्षाएं उत्तीर्ण होने पर होगा

शुल्क सूचना : आदरणीय सदस्यों से निवेदन है कि आपकी प्रिय मासिक पत्रिका 'विश्ववारा संस्कृति' मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो रही है और आप तक समय पर पहुंच रही है।

आपने सदस्यता ग्रहण करके वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु जो सहयोग प्रदान किया तदर्थ धन्यवाद! कुछ सदस्यों का मासिक सदस्यता शुल्क जनवरी 2019 को समाप्त हो गया है, फिर भी पत्रिका निरंतर प्रेषित की जा रही है। अधिक समय तक शुल्क न मिलने पर पत्रिका का प्रेषण करना संभव नहीं हो पाएगा। अतः आपसे निवेदन है कि अपना शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें।

चैक/मनीआर्डर 'आर्यसमाज' के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010100282, IFSC- UTB10SCN560 में जमा करा कर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें।

- प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) मोबाइल : 9871798221, 7011279734

होली गेहूं की फसल के आगमन की खुशियां

होली का पर्व प्रत्येक वर्ष चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की प्रथम तिथि को मनाया जाता है। एक दिन पूर्व फाल्गुल मास की पूर्णिमा पर होलिका दहन की परम्परा भी लम्बे समय से समाज में चली आ रही है। **होली प्राचीन काल में ऋषियों व विद्वानों द्वारा किये जाने वाले महायज्ञ का एक बिगड़ा हुआ रूप प्रतीत होता है।** हम जानते हैं कि महाभारत युद्ध के बाद देश में अविद्या की वृद्धि और विद्या का नाश उत्तरोत्तर होता रहा।

इस दीर्घावधि में परमात्मा से सृष्टि के आरम्भ में प्राप्त चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद व इनका ज्ञान व मान्यतायें विलुप्त होकर इसके स्थान पर अज्ञान व अन्धविश्वासों ने पैर फैलाये व जमाये जिससे सारे देश व विश्व को अज्ञान के तिमिर ने अन्धकारयुक्त कर दिया। दैवयोग से ईसा की उन्नीसवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में गुजरात के मौर्वी राज्य में पं. करशण तिवारी जी के घर 12 फरवरी, 1825 को एक बालक मूलशंकर का जन्म हुआ जिसने मूर्तिपूजा के अन्धविश्वास की वास्तविकता जानने एवं मृत्यु पर विजय पाने के लिये गृह त्याग कर धर्म व अधर्म पर अनुसंधान किया और धर्माधर्म विषयक सभी प्रश्नों के समाधान प्राप्त किये।

गृहत्याग के बाद मूलशंकर ने संन्यास लेकर स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824-1883) नाम धारण किया और संसार से अविद्या दूर कर देश, समाज व विश्व को अविद्या से मुक्त करने का संकल्प लेकर कार्य किया। उनके अनुसंधान का एक परिणाम यह भी था कि सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को परमात्मा ने एक-एक वेद का ज्ञान दिया था। यह ज्ञान ईश्वर, जीव व प्रकृति के सत्य स्वरूप व गुण, कर्म व स्वभाव पर प्रकाश डालने के साथ मनुष्यों को धर्म व अधर्म से परिचित भी कराता है। वेदों में जो विधेय बातें हैं वह सब धर्म और जो निषिद्ध बातें हैं वह अधर्म हैं।

ऋषि दयानन्द ने वेद मंत्रों के संस्कृत व हिंदी भाषा में अर्थ किये और लोकभाषा हिन्दी में वैदिक मान्यताओं एवं सिद्धांतों पर आधारित एक अपूर्व धर्म एवं सामाजिक क्रांति करने वाले ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' की रचना की। उन्होंने देश व संसार से अविद्या दूर करने के अपने उपाय व प्रयत्न किये जो आंशिक रूप से सफल हुए। उनके समय में विद्यमान मत-मतान्तरों के असहयोग व हठधर्मिता के कारण विश्व से अविद्या दूर करने का उनका स्वप्न व पुरुषार्थ सफल न हो सका।

प्राचीन काल में सामूहिक रूप से जो यज्ञ किये जाते थे वह महायज्ञ कहे जा सकते हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि होली के दिन जो होलिका जलाई जाती है वह उसी महायज्ञ का बिगड़ा हुआ रूप है। इस दिन सभी हिन्दुओं को अपने घरों में अग्निहोत्र करने चाहिये और सभी लोगों को स्थान-स्थान पर सामूहिक महायज्ञों का अनुष्ठान आर्यसमाज के पुरोहितों से कराना चाहिये जिससे हमारा सामाजिक एवं वायुमण्डलीय वातावरण प्रदूषण एवं विकारों से मुक्त हो। यज्ञ में वेदमंत्रोच्चार से ईश्वर स्तुति, प्रार्थना व उपासना भी होती है। यही होली जलाने का प्रयोजन तर्क व युक्ति पर आधारित प्रतीत होता है।

होली का पर्व ऋतु परिवर्तन का पर्व भी है। हमारे देश में तीन मुख्य ऋतुयें शीत, ग्रीष्म एवं वर्षा हैं। शीत ऋतु में लोग सर्दी से कष्टों का अनुभव करते हैं। वृद्ध लोगों के लिये तो यह जान लेवा भी होती है। अति वृद्ध अनेक लोगों का वियोग भी अतिशीतकाल में होता है। शीत ऋतु के कमजोर पड़ने व ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ की संधि फाल्गुन मास की पूर्णिमा और चैत्र माह के कृष्ण पक्ष के प्रथम दिवस को यह पर्व मनाया जाता है। इस समय शीत ऋतु प्रायः समाप्त हो चुकी होती है और ग्रीष्म ऋतु का आरम्भ हो रहा व हो गया होता है। वृक्ष व वनस्पतियां भी अपने पुराने आवरण, पत्तों वा वस्त्रों को छोड़कर नये पत्तों को धारण करती हैं। फूलों से बाग बगीचे भरे हुए होते हैं। सर्वत्र सुगंध का प्रसार अनुभव होता है और बाग बगीचों को देखकर स्वर्गिक आनन्द की अनुभूति होती है। ऐसा लगता है कि ईश्वर अपनी कला का नाना प्रकार के रंग बिरंगे फूलों के माध्यम से दर्शन करा रहा है।

यह सत्य भी है। रचना को देखकर रचयिता का ज्ञान होता है। वस्तुतः इन रंग बिरंगे फूलों व इनमें सुगंध को अनुभव करके हमें इनके उत्पत्तिकर्ता व पालक परमेश्वर का ज्ञान होता है। फूल तो गुण है परन्तु इन गुणों रंग व रूप आदि का गुणी हमें वह परमात्मा प्रतीत होता है। ■■

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के वार्षिकोत्सव व साधारण अधिवेशन में 5 वर्ष के लिए माननीय देवेंद्रपाल जी वर्मा को अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के समस्त अधिकारी, आचार्य, ब्रह्मचारियों की ओर से हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं !!

■ **आर्य कै. अशोक गुलाटी**
प्रबंधक संपादक

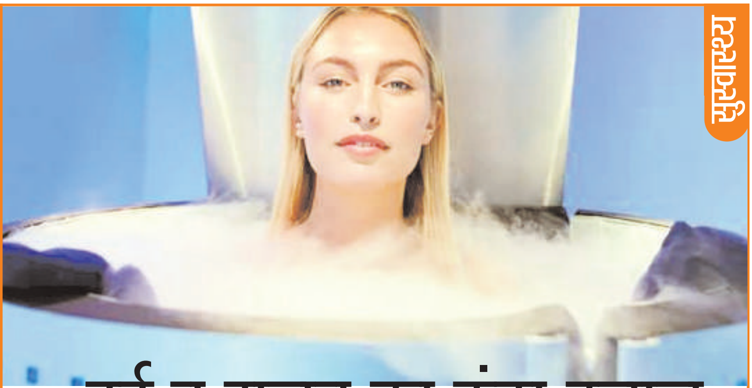

दर्द व सूजन का ठंडा इलाज

क्रायोथेरैपी

आजकल फिट रहने और सुंदर बने रहने के लिए कई तरह की थेरैपी का इस्तेमाल किया जा रहा है। इन्हीं में से एक है क्रायोथेरैपी। अपने जल्दी प्रभावों के कारण ये थेरैपी काफी प्रचलित हो रही है। क्रायोथेरैपी का उपयोग कई सेलिब्रेटिज जवान, सुंदर और चुस्त दुरुस्त बने रहने के लिए करते हैं। इसका उपयोग एथलीट और खिलाड़ी भी अपनी नसों में आने वाले खिंचाव और दर्द को दूर करने के लिए करते हैं। क्रायो का मतलब होता है ठंडा और थेरैपी का मतलब होता है, इलाज की प्रक्रिया। जैसी का नाम से ही स्पष्ट है कि बेहद कम तापमान पर दर्द का इलाज करने की पद्धति को क्रायोथेरैपी कहते हैं। इस थेरैपी को दर्द, सूजन और मसल्स के खिंचाव को कम करने के लिए किया जाता है। साथ ही यह थेरैपी तनाव और वजन को कम करने में भी मददगार साबित होती है। इससे एनर्जी को बढ़ाने में भी मदद मिलती है।

कैसे काम करती है ये थेरैपी

इस थेरैपी में दर्द से पीड़ित व्यक्ति को एक चेंबर में रखा जाता है। इस चेंबर में लिक्विड नाइट्रोजन का प्रवाह किया जाता है जिसके चलते चेंबर का तापमान बेहद कम हो जाता है। अंदर का तापमान माइनस 200 से 300 फारनेहाइट तक कर दिया जाता है। व्यक्ति को इस तापमान में 2 से 4 मिनट तक रहना होता है। इस प्रक्रिया के दौरान शरीर में एंडोर्फिन हार्मोन का स्तर बढ़ने लगता है, हालांकि इतने कम तापमान में रहना काफी मुश्किल होता है लेकिन यह शरीर के दर्द वाले स्थान के बढ़े हुए तापमान को कम करता है। जिससे दर्द में राहत मिलती है। यह थैरेपी रक्त संचार की गति को बढ़ाती है और तंत्रिकाओं के वेग को भी कम कर देती है जिसके कारण दर्द काबू में आ जाता है। इस थैरेपी से सूजन के दर्द को कम करने के साथ ही इम्यून सिस्टम भी बूस्ट होता है।

मूड अच्छा करती है

क्रायोथेरैपी के कारण एंडोर्फिन हार्मोन के स्तर में वृद्धि होती है जो कि मूड को अच्छा करने के लिए आवश्यक हार्मोन होता है।

कैलोरी होती है बर्न

मोटापा कम करने के लिए भी क्रायो थेरैपी का इस्तेमाल किया जाता है। इस प्रक्रिया को क्रायोपालिसिस कहा जाता है। इस थेरैपी से जांघों, कूल्हों और पैरों पर जमा हो चुके अतिरिक्त फैट या सेल्युलाइट कम हो जाता है। दअरसल, बहुत अधिक ठंढ में रहने पर शरीर में रक्त प्रवाह तेज हो जाता है। इससे मेटाबालिजम प्रक्रिया तेज हो जाती है और एक बार में 400 से 800 कैलोरी बर्न होती है।

माइग्रेन में लाभदायक

क्रायोथेरैपी माइग्रेन के कारण होने वाले सिर दर्द को भी कम करती है। रिसर्च के अनुसार माइग्रेन के दर्द को कम करने के लिए यह थेरैपी उपयोगी मानी गई है।

थकान होती है कम

क्रायोथेरैपी से थकान तुरंत कम होती है, 3 मिनट के एक सेशन में ही थकान कम हो जाती है और भरपूर ऊर्जा मिलती है। टफ वर्कआउट के बाद आई थकान और सूजन पर ये थेरैपी काफी अच्छा काम करती है।

त्वचा की परेशानियों से निजात

इस ट्रीटमेंट से मस्से, अनचाहे तिल, ट्यूमर या उनकी वृद्धि, सनबर्न जैसी स्कीन की समस्याओं को ठीक किया जाता है। इसके अलावा मुंहासे और गहरे घाव के इलाज के लिए भी इस थेरैपी का इस्तेमाल किया जाता है। इस ट्रीटमेंट में आपकी त्वचा के प्रभावित हिस्सों को तरल नाइट्रोजन के जरिए फ्रीज किया जाता है जिससे त्वचा से जुड़ी सारी अशुद्धियां तुरंत खत्म हो जाएं। इस थैरेपी के बाद आपकी त्वचा में भी निखार आ जाता है।

भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों की झलकियां

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17 पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022 Date of Dispatch 12 Every Month

भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों की झलकियां

विश्ववारा संस्कृति

आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएड़ा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221